ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 16 अंक-11 सितम्बर-I, 2015 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹8.00

श्रीकृष्ण की मनमोहन छवि की छटा बिखरेगी इस धरा पर...!

एक आम जनमानस से लेकर विशेष व्यक्ति तक, सभी की चाह है, आशना है, एक ऐसे आशियाने की जो पूरी तरह से अमन, चैन व पाकीज़गी से आच्छादित हो, जहां सब हों, सभी के लिए हों, सबके स्वर एक हों, उठें तो मधुर पंछियों के गान के साथ, खेलें तो सुन्दर साज़ वाले फूलों व भ्रमर गुंजन के साथ। जहां खेलना, खाना और रास रचाना हो। ऐसी मनभावन दुनिया, जहां हर माँ यशोदा और हर पिता नंदबाबा होगा, बस आने ही वाला है...! विडम्बना यह है कि आप कहीं वंचित न रह जायें। ये शिकायत न रहे कि आपने हमें बताया नहीं, कि मनोहर श्री कृष्ण की मनमोहन छवि की मनोरम छटा इस धरा पर बिखरने वाली है...!

कहते हैं सतयुगी सृष्टि में सभी रास रचाते थे, कृष्ण को भी रासलीला करते हुए दिखाया गया है। वैसे भी रास को अंग्रेजी में हार्मनी कहते हैं, हार्मनी का अर्थ है जहां सभी सौहार्दपूर्ण तरीके से रहते हों। सभी जब एक-दूसरे के साथ हार्मनी से रहते हैं, रास रचाते हैं तो दुनिया बहुत सुंदर हो जाती है। रास रचाने की दुनिया में जाने की शर्त है कि हम भी सबसे पहले अपने आप तथा अपने आस-पास के लोगों के साथ रास रचायें, अर्थात् सौहार्दपूर्ण संबंध का निर्माण करें, क्योंकि किसी भी संस्कार की शुरुआत एक दिन में तो नहीं हो जाती। बस आपको आज व अभी से उस दौड़ में नामांकन कराने के लिए अपने संस्कारों पर कार्य करना है। कहते हैं कि जो आज हम हैं, वो पूर्व जन्मों के संस्कारों के आधार से हैं। अब आप यदि उस संस्कार को पुनः अपना बना लेते हैं तो आप उस चीज़ की भागीदारी सुनिश्चित कर लेंगे। कृष्ण जैसे रूप को सभी पाना चाहते हैं, सभी वैसा बनना भी चाहते हैं, लेकिन उसके पीछे व्यावहारिक रूप से अपने को आकर्षणमय बनाना तो पड़ेगा ना! क्योंकि उस आकर्षणमय सृष्टि में हमारा प्रवेश महज़ इत्तेफाक नहीं है, बल्कि हमें परिवर्तन से वहां जाना होता है। बिना पूर्व तैयारी के वहां की खुशबू को तो हम छू भी नहीं पायेंगे। इसके लिए हमें करना कुछ नहीं है, करना सिर्फ एक चीज़ है कि हमको राजयोग सीखकर राजकुमार बनना है, तभी हम उस नरपति, उस कृष्ण या उस जैसे राजकुमार के साथ रास रचा पायेंगे। तो हम चाहते हैं कि आप भी परिवर्तन करें, यदि उस आकर्षणमय सृष्टि के साथ आपको जुड़ना है तो! बस, आप आज से और अभी से ही उठ जाइए और बढ़ा दीजिए अपना हाथ। हमें भक्ति-भाव से निकल उसके भाव को विवेक से समझ, अपना ज्ञान व अनुभव बढ़ाकर उस दुनिया के लिए तैयारी करनी है।

फिर भी हम सोच रहे हैं कि क्या ऐसा भी हो सकता है...? क्योंकि मानव मन इतनी गहरी चोट कालचक्र के अनुरूप इस कलियुग के अंतिम चरण में झेल रहा है, तो उन्हें विश्वास ही नहीं होता कि आने वाले समय में कुछ ऐसा होने जा रहा है। जैसे सुबह, दोपहर, शाम और रात, सप्ताह चक्र, वर्ष चक्र घूमता है, उसी प्रकार विश्व कालचक्र में सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग भी घूमता है। सभी चक्र अपने समयानुसार उस परिस्थिति में अच्छे होते हैं, जब वो कालक्रम घट रहा होता है, लेकिन अंतिम चरण में स्थितियां बदल ही जाती हैं। आज भी वैसा ही हो रहा है। आज हम उसी दौर से गुज़र रहे हैं जहां कलियुग के बारे में ग्रन्थों में कहा गया है कि ऐसा कलियुग आएगा जहां कन्या मुख से वर मांगेगी, गाय विष्टा खायेगी, सामान पुड़ियों में बिकेगा, तब समझना कि कलियुग का अंतिम दौर है और उसी के बाद अंत निश्चित है। उसी को देखते हुए आज हम यदि सारे विश्व में दृष्टिपात करें तो ये चिन्ह हमारे मानस पटल पर उभर आता है। ये कोई कोरी कल्पना नहीं, क्योंकि ये चक्र अच्छाई के बाद बुराई, बुराई के अंत और फिर अच्छाई, ये विधि का विधान है। जैसे कहीं न कहीं हमारे मन में यह विचार प्रस्फुटित होता है कि वसुधैव कुटुम्बकम जैसी व्यवस्था इसी विश्व में हो। अब बहुत हो गया और बस...बस...और बस! हमें पूर्व में बताया कि कृष्ण के साथ रास रूपी हमारा जीवन होगा, तो यह कालचक्र पुनः निकट भविष्य में दोहराने जा रहा है। लेकिन प्रश्न उठता है कि ये सब कैसे होगा? बस और कुछ नहीं करना है। अपने मन में उपजती विकृत सोच रूपी फसल को समाप्त करना होगा और स्वयं में निहित दिव्य व अच्छे विचारों को आरोपित करते हुए जीवन जीना आरंभ करना होगा। योग का मतलब ही है स्वयं में परमात्मा द्वारा दी हुई भीतरी सुंदरता व दिव्यता को व्यावहारिक रूप देना। तो आइये, हम जिस स्वर्णिम दुनिया की कल्पना कर रहे हैं, उस तरफ एक कदम बढ़ाकर शुरुआत स्वयं से करें जिससे हमारे मन में सुख-शांति रूपी चैन की बांसुरी बजे।

आओ करें जन्माष्टमी के साथ न्याय

एक नन्हीं सी बच्ची ने मम्मी से कहा...मम्मी आज डैडी का बर्थ डे है। डैडी कहाँ हैं? मैं उनसे ढ़ेर सारी चॉकलेट लूंगी। आप उनके लिए बढ़िया सा केक बनाना, हम उन्हें विश करेंगें। मम्मी ने कहा...आज मेरे ठाकुर जी का भी बर्थ डे है, उन्हें भी विश करेंगे। बच्ची कहती है ' कौन से ठाकुर? मम्मी कहती, वो जो सामने फोटो लगा है जो...। वो तो मेरा कान्हा है। वे कहाँ है? हम उनके साथ केक काटेगें। मम्मी निरुत्तर थी। खैर, आज हर आयु, वर्ग वाले लोग उन महान, दिव्य श्री कृष्ण के जन्म को जन्माष्टमी के रूप में मनाते है....।

- ब्र. कु. गंगाधर

आजकल तो `नेताओं' तथा `महात्माओं' के जन्मदिन मनाने का काफी रिवाज़ है। आये दिन भारत में कभी विवेकानन्द जयन्ती, कभी महावीर जयन्ती, कभी गांधी जयन्ती, कभी तिलक जयन्ती, कभी राष्ट्रपति जी का जन्मदिन और कभी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म दिन मनाया जाता है। इन व्यक्तियों और जयन्तियों पर आप विचार करेंगे तो देखेंगे कि इनमें से कई व्यक्ति तो केवल राजनीति ही के क्षेत्र में प्रतिभाशाली माने गये हैं और अन्य कई केवल धार्मिक क्षेत्र में। दोनों क्षेत्रों में समान रूप से किसी का प्रभुत्व रहा हो, ऐसा शायद कोई भी व्यक्ति नहीं मिलेगा। मिल भी जाये तो भी वह पूज्य कोटि का नहीं होगा। परन्तु श्रीकृष्ण, जिनका जन्मदिन भारतवासी हर वर्ष, `श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव' नाम से मनाते हैं, के जीवन में आपको यह विलक्षणता स्पष्ट रूप से मिलेगी। श्रीकृष्ण निर्विवाद रूप से एक अत्यन्त आध्यात्मिक व्यक्तित्व थे और उन्हें राजनीतिक पदवी, प्रशासनिक कुशलता भी खूब प्राप्त थी। अतः श्रीकृष्ण अपने चित्रों तथा मंदिरों में सदैव प्रभामण्डल (प्रकाश के ताज) से सुशोभित तथा रत्न-जड़ित स्वर्णमुकुट से भी सुसज्जित दिखाई देते हैं। इसलिए मालूम रहे कि श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव हमें धार्मिक और राजनैतिक दोनों सत्ताओं की पराकाष्ठा को प्राप्त श्रीकृष्ण देवता की याद दिलाता है।

श्रीकृष्ण जन्म ही से महान् थे

इस प्रसंग से ध्यान देने के योग्य एक बात यह भी है कि दूसरे जो प्रसिद्ध व्यक्ति हुए हैं कि जिनके जन्म-दिन एक सार्वजनिक उत्सव बन गये हैं, वे कोई जन्म ही से पूज्य या महान् नहीं थे। उदाहरण के तौर पर विवेकानन्द सन्यास के बाद ही महान् माने गये। महात्मा गाँधी प्रौढ़ अवस्था में ही एक राजनीतिक नेता अथवा एक सन्त के रूप में प्रसिद्ध हुए। यही बात तुलसी, कबीर, दयानन्द, वर्द्धमान महावीर आदि-आदि के बारे में भी कही जा सकती है। परन्तु श्रीकृष्ण की यह विशेषता है कि उनके जन्म के समय भी उनकी माता को विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार हुआ और वे जन्म ही से पूज्य पदवी को प्राप्त थे। आप उनके किशोरावस्था के चित्रों में भी उन्हें दोनों ताजों से सुशोभित देखते होंगे। उनकी बाल्यावस्था के जो चित्र मिलते हैं, उनमें भी वे मोर पंख, मणिजड़ित आभूषण तथा प्रभामण्डल से युक्त देखे जाते हैं। आज भी जन्माष्टमी के दिन भारत की माताएं पालने या पंगूरे में श्रीकृष्ण की बाल्यावस्था की मूर्ति या किसी चेतन प्रतिनिधि रूप में बालक को लिटाकर उसे बहुत भावना से झुलाती हैं। आज भी श्रीकृष्ण की बाल्यावस्था की झांकियाँ लोग बहुत चाव और सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। आप कल्पना करें कि ऐसे महान विश्वनायक यदि पुनः इस धरा पर आ जायें तो फिर से यहीं पर स्वर्ग होगा और सुख, शांति की बांसुरी बजेगी। महान दिव्य पुरुष का आगमन बहुत जल्द ही होगा...। भारत में साफ, शुद्ध व दिव्यता से आलोकित छटा बिखरेगी। वो समय अब दूर नहीं जब हम सब श्रीकृष्ण के साथ जीवन में रास लीला करेंगे।

जिस बच्चे को अभिमान नहीं है वही उपराम है

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

शिवबाबा ने अपना काम करने के लिए ब्रह्मा बाबा से देह सहित देह के सब सम्बन्ध, सब बातें फिनिश कराके अपना बना लिया। शिवबाबा ने सेकेण्ड में ब्रह्माबाबा में प्रवेश किया, उसी घड़ी बाबा की दृष्टि बदल गयी। लाइट लाइट दिखाई पड़ी, माइट मिली। आज दिन तक अव्यक्त हो करके भी यही काम कर रहा है। शिवबाबा तो जन्म-मरण में आता ही नहीं है, पर ब्रह्मा बाबा ने साकार शरीर में होते अव्यक्त स्थिति ऐसी बनाई जो वह अव्यक्त स्थिति अभी भी काम कर रही है। यह जानने, मानने, अनुभव करने से हमारी ऐसी स्थिति अव्यक्त बन सकती है। ज़रा भी अभिमान तो छोड़ो, देहभान भी नहीं, जैसे ब्रह्मा बाबा को देह के भान से भी न्यारा देखा। परमात्मा ने अभी जो संस्कार बनाये हैं उसमें द्वापर के बाद भी अभिमान नहीं आया होगा। चेक करो, सभी ऐसा फॉलो फादर का फायदा उठा रहे हैं? सी फादर, फॉलो फादर।

बाबा जो सुबह को मुरली चलायेगा, सारे दिन में कोई शब्द गहराई में ले जाते तो वो अनुभव भूलता नहीं है क्योंकि शिवबाबा सर्व आत्माओं का पिता है, उसने नई दुनिया स्थापन करने के लिए ब्रह्मा बाबा का रथ ले लिया। रथ कहता है यह मेरा नहीं है उसका है, पर पुरुषार्थ में ब्रह्मा बाबा ऐसा ज़रा भी व्यक्त भाव नहीं, आवाज़ से परे। तो अभी समय अनुसार बाप समान पुरुषार्थ करना चाहिए, यह अंतिम घड़ियाँ हैं। ज्ञान में किसी को कितना, किसी को कितना समय हुआ है, पर पुरुषार्थ में, बाबा की दृष्टि में कितने साल के हो गये हो? ज्ञान दिल से सुनाना, ऐसे नहीं सिर्फ लेक्चर करना है, दिल से सुनाने की जो अंदर से भावना है, बाबा ने जो सुनाया है वही सुनाना है।

सारी दुनिया में, सारे कल्प में ऐसा सेवा का स्थान कोई भी नहीं है, जो सेवा बढ़े, भाग्य बनावें। तो भाग्य बनाने में तीन बातें हैं। पहले अंदर से त्याग हो, त्याग के लिए वैराग्य चाहिए। वैराग्य भी शमशानी नहीं, कोई ऐसी बात आयी तो वैराग्य आया फिर कहाँ रग चली गयी, फिर वो त्याग नहीं कर सकता है। त्याग वृत्ति से त्याग फिर कारोबार में है, लौकिक या ईश्वरीय परिवार में है, फिर अनासक्त वृत्ति है। जिसको बाबा कहते गृहस्थ में रहते हुए ट्रस्टी है। कोई भी चीज़ को अपनी नहीं समझता है। शुरु में सेवायें जिस तरीके से हुई हैं। त्याग वृत्ति और अनासक्त वृत्ति से सेवा करने वाले यहां रहने वालों से भी ज़्यादा भाग्यवान हैं। समर्पण माना क्या? पढ़ाई में रेग्युलर, धारणा में नम्बरवन। कोई भी बात को मेरा नहीं समझे। बाबा देखता है बच्चे को अभिमान नहीं है, उपराम है। जैसे सारे विश्व की सेवा में शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा को साथी बनाया। जब तक विनाश होगा तब तक दोनों (साकार निराकार) मिल करके, अव्यक्त हो करके सेवा कर रहे हैं। त्याग वृत्ति और अनासक्त वृत्ति से जो सेवा हुई उसके लिए मान मिला, उसमें भी वृत्ति न जाये क्योंकि बाबा ने कराया है। कभी यह चिंतन नहीं कि मैंने किया या मुझे करना है। फ्री हैं। ऐसी स्थिति बनाने से पहले हम बाबा पर बलिहार हुए, अभी बाबा हमारे ऊपर बलिहार हुआ।

अभी भगवान का इतना प्यार देखा है और सबको करता है, कोई नहीं कहेगा मेरे को बाबा प्यार नहीं करता। बाबा तो करता है लेकिन वो नहीं लेता तो बाबा क्या करे? बाबा प्यार दे रहा है, वो फिर थका हुआ है, मूँझा हुआ है, घबराया हुआ है, थोड़ा सा निराश हो जाता है तो बाबा क्या करे? तो बाबा का दोष नहीं है, कितना बाबा को याद करते हैं, लेकिन नहीं याद आता है तो मैं क्या करूँ? कोई और बातें याद करेंगे तो बाबा कैसे याद आयेगा? बाबा अनकंडीशनल लव देता है परन्तु होशियार बहुत है, कंडीशन बहुत डाल्ता है। ज़रा भी बुद्धि में हेराफेरी हुई तो बाबा के साथ का अनुभव नहीं हो

खुशी कई बीमारियों को खत्म करती है

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा ने हमें बहुत ही सुंदर ज्ञान दिया है, लेकिन ज्ञान में कायदे भी हैं। ज्ञान में बोल के ऊपर भी कायदे हैं, भले फ्री हैं हम, ब्राह्मण परिवार है, कोई किसके बन्धन में नहीं है, परन्तु मर्यादायें तो हैं ना। जनरल बाबा ने मर्यादायें बता दी हैं, पर्सनल छोड़ो लेकिन जनरल जो बाबा बताते हैं, हमारे लिट्रेचर में भी छपता है, ऑफिशियल वह तो हमारे में होने ही चाहिए ना! चलो, सब चल रहे हैं, हम भी चल रहे हैं, ठीक है। ऐसी कोई न कोई बात उल्टी बुद्धि में आ जायेगी ना तो फिर उल्टा चलेगा। लेकिन जो ज्ञानी तू आत्मा है वो हमेशा सोचता है कर्म करने के पहले, जो कर्म मैं कर रहा हूँ किस लक्ष्य से? पहले लक्ष्य भी मेरा राँग है जैसेकि नाम चाहिए, या काम थोड़ा हो तो महिमा हो, लक्ष्य ही राँग है, तो उसमें काम भी ऐसा ही होता है। खुद अपने से भी अंदर संतुष्ट नहीं होगा, क्योंकि यह जो मैंने किया है वो ठीक नहीं है। कोई भी बात हो क्योंकि जेनरल में लेन-देन वगैरा चीज़ें देना लेना, यह सब होगा और होता ही है। लेकिन मेरी अवस्था उस हलचल में हिले नहीं, मैं अपने मौज को छोडूँ नहीं। मौज में रह करके कमल पुष्प समान रह सकते हैं। अगर बुद्धि में लक्ष्य है, मुझे ऐसा चलना है जैसे शुरु-शुरु में हम आये तो लक्ष्य मिला ना कि कमल पुष्प समान न्यारे और प्यारे रहना है। बाबा की मुरलियों में भी भिन्न-भिन्न युक्तियाँ रहने के लिए मिलती रहती हैं। और संगठन है तो उसमें अटेन्शन तो रखना ही पड़ता है। उसमें चेक करें कि मैं मर्यादापूर्वक हूँ, चलते-चलते सारा समय ठीक रहता हूँ? या कोई न कोई बात बीच में आ जाती है? ठीक चलते चलते भी कभी बीच में आ जाती है, तो उसकी जजमेन्ट के लिए चाहिए सचमुच योगयुक्त आत्मा। बाबा की याद में बैठके बाबा द्वारा ही चेक करायें कि मैं ठीक हूँ या नहीं? और बाबा की टचिंग तो होती है, ऐसे नहीं है मैं चाहूँ बाबा से और बाबा हमको नहीं देवे, हमारी गलती हो सकती है, बाबा की नहीं। भले पहले नहीं पता पड़ता है लेकिन चलते-चलते फिर मन में आ जाता है, सही बात भी आती है, वो कैच करें बस। ऐसे नहीं बात को चला लेवे। कर लेंगे, मेरी बुद्धि में स्पष्टीकरण तो है कि यह करना है लेकिन करने की हिम्मत कम है। जब करना ही है तो करना ही है, फिर उसको हल्का नहीं छोड़ें। किसी की भी मदद चाहिए तो ले सकते हैं। कोइ भाई बहनों से भी राय ले सकते हैं, थोड़ा वेरीफाई कराना चाहिए। जो समझदार हैं, वो तो बातें समझ जाते हैं लेकिन फिर भी वेरीफाई कराना चाहिए।

खुशी कभी नहीं गंवायें, बातें तो आयेंगी। यहाँ इतने जो भी रहते हैं, उनके साथ रहना माना साथ निभाना और भिन्न-भिन्न रहते हैं। फिर भी हम तो आप लोगों को हिम्मतवाला समझते हैं जो आपने फौरन ही जज किया कि क्या करना है, क्या नहीं। कई अभी तक भी जज कर रहे हैं, करना क्या है? फायदा भी नज़र आता है और धोखा भी समझ में आता है। पता अंदर पड़ता है लेकिन नाम के कारण बेफिक्र हो जाते हैं। तो हमें अपने को भी चेक करना है और दूसरे जो साथी रहते हैं उनसे भी चेक कराना है। अगर अंदर सेटीस्फाई हो कि मैं ठीक हूँ, तो कोई बात नहीं। लेकिन अगर चलते-चलते रुक जाते हैं और खुशी कम हो जाती है तो ज़रूर चेक करना चाहिए। खुशी कई बीमारियों को खत्म करती है। खुशी नहीं होगी तो कई बीमारियां आ जाती हैं। फिर यहां संगठन का बंधन भी है। आप चाहो आज यह नहीं करूँ, आपको करना ही पड़ता है। ज़रूर यह बंधन है लेकिन यह बंधन फायदे वाला है। वो तंग होके नहीं करें, पहले बुद्धि को समझायें राईट क्या है?

करतार की सुंदर कृति कृष्ण को देखें...

-ब्र.कु. नलिनी दीदी,घाटकोपर,मुम्बई

आज भी श्रीकृष्ण की आरती करते हुए मनुष्य भाव-विभोर हो जाते हैं। श्रीकृष्ण को इतना उच्च मानते हैं कि उस पर वारी जाते हैं और 'कृष्ण अर्पण' कह श्रीकृष्ण की मूर्ति पर स्वेच्छा से धन न्यौछावर करते हैं। वैसे तो संसार में यह रिवाज़ है कि छोटी आयु के बच्चे बड़ों के आगे माथा झुकाते हैं परन्तु श्रीकृष्ण के जन्म से ही उन्हें सभी बाल, वृद्ध और 'महात्मा' भी नमस्कार करते या अष्टांग प्रणाम करते हैं। श्रीकृष्ण बचपन से ही, जन्म से ही, इतने महान कैसे बने?

इस संसार में यदि कोई बहुत सुंदर होता है, तो लोग कहते हैं `इसे तो भगवान ने अपने हाथों से रचा है।' कई ऐसा भी कहते हैं `इसे तो विधि ने खूब गढ़ा है।' कई ऐसा भी कहते हैं, `ब्रह्मा जी अथवा विश्वकर्मा ने तो इस पर अपनी सारी कारीगरी लगा दी है।' कई ऐसा भी कहते हैं, `यह तो किसी न्यारे ही तत्वों से बना है।' ऐसे ही न्यारे तत्वों से विधाता ने रचा था श्रीकृष्ण को। अतः श्रीकृष्ण तो वास्तव में ईश्वर की सर्वोत्तम रचना है। जैसे बालक को देखकर पिता की याद आती है, किसी सुंदर कृति को देखकर कर्ता की याद आती है, वैसे ही श्रीकृष्ण की मूर्ति को देखकर उसके रचयिता स्वयं भगवान शिव की याद आती है, परंतु आज श्रीकृष्ण की महानता को न जानने के कारण भारतवासियों ने स्वयं ही अपने पूज्य देवताओं पर निराधार मिथ्या कलंक लगाये हैं। जैसे, श्रीकृष्ण की 16108 रानियाँ थीं, श्रीकृष्ण घर-घर जाकर माखन चुराता था, श्रीकष्ण ने गोपियों के चीर हरण किये, श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध कराया आदि आदि... ऐसे मिथ्या आरोप लगाकर श्रीकृष्ण की महानता को कम कर दिया जाता है। कहावत प्रसिद्ध है कि ज्ञान द्वारा नर को श्री नारायण और नारी को श्री लक्ष्मी पद प्राप्त होता है, परंतु आज लोगों को यह मालूम नहीं है कि श्रीकृष्ण ने वह देव पद कैसे प्राप्त किया था? किसी को राज्य-भाग्य या धन-धान्य या तो दान-पुण्य करने से या यज्ञ करने से या युद्ध द्वारा शत्रु राजा को जीतने से ही प्राप्त होते, परन्तु श्रीकृष्ण को जो राज्य भाग्य अधवा धन-धान्य प्राप्त था, कोई साधारण, विनाशी न था बल्कि अलौकिक अखण्ड तथा सम्पूर्ण और पवित्र था, तभी तो दूसरे राजा-महाराजा भी श्रीकृष्ण अथवा श्रीनारायण की भक्ति पूजा करते हैं। प्रश्न उठता है कि श्रीकृष्ण ने कौन सा यज्ञ, कौन सा दान-पुण्य अथवा कौन सा युद्ध किया था, जिसके फलस्वरूप उनको ऐसा सर्वोत्तम, दो ताजधारी पूज्य देव पद प्राप्त हुआ, जिसका आज तक गायन-वंदन होता है। परमपिता शिव परमात्मा ने अब इसके विषय में समझाया है कि श्रीकृष्ण ने प्रजापिता ब्रह्मा के रूप में ईश्वरीय ज्ञान धारण करके `ज्ञान यज्ञ' रचा था। उन्होंने अपना तन, मन और धन सम्पूर्ण रीति से उस यज्ञार्थ `ईश्वरार्पण' कर दिया था। उन्होंने अपना जीवन मनुष्य मात्र को ज्ञान-दान देने में लगा दिया था और जन मन को परमपिता परमात्मा से योग युक्त करने तथा उन्हें सदाचारी बनाने में व्यतीत किया था। उन्होंने काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार जिनका उस समय समस्त भूमण्डल पर अखण्ड राज्य को ज्ञान-तलवार तथा योग के कवच के प्रयोग से जीता था। इसी के फलस्वरूप उन्होंने भविष्य में सृष्टि के पवित्र हो जाने पर सतयुग के आरंभ में भी कृष्ण के रूप में अटल, अखण्ड और अति सुखकारी तथा दो ताजधारी स्वर्गिक स्वराज्य तथा पूज्य देव पद प्राप्त किया था।

आज लोग जन्माष्टमी का उत्सव मनाते हैं, तो बिजली के सैंकड़ों बल्ब जगाकर उजाला करने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु आज आत्मा रूपी बल्ब तो फ्यूज़ हो चुका है। आज बाहर तो रोशनी की जाती है, परन्तु स्वयं आत्मा रूपी चिराग के तले अंधेरा है और उस अंधेरे में विकार रूपी चोर छिपे बैठे हैं। अतः आज आवश्यकता है नव चेतन की, अपने जीवन के नव निर्माण की, अपने प्राण में नव प्राण की, अपने घर-गृहस्थ में नये विधि विधान की, नये एवं उज्जवल विचारों की, जीवन में नई उमंग, नई तरंग पैदा करने वाली एक नई तान की। तब यहां नई ज़मीन और नया इंसान बनेगा, नई दुनिया और नया जहान बनेगा। परंतु आज मनुष्य को यह भी मालूम न होने के कारण कि वर्तमान `समय' कौन सा है तथा भविष्य में कौन सा समय आनेवाला है वे अज्ञान निद्रा में सोये पड़े हैं तथा पुरुषार्थहीन हैं।

अब यदि उन्हें इस सत्य की जानकारी हो जाए कि वर्तमान समय ही कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि का संगम समय है, जबकि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर पुनः गीता ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं और निकट भविष्य में श्री कृष्ण का सच्चा, दैवी स्वराज्य शुरु होने वाला है, तो भारत की हज़ारों लाखों, नर-नारियाँ अपने जीवन को पावन बनाकर, उस स्वर्णिम दुनिया में जाने के पुरुषार्थ में लग जायेंगे।

बहादुरगढ़-पालिका कॉलोनी। शहीदी पार्क में आयोजित सामूहिक योग कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. अंजली, ब्र.कु. विनीता, ब्र.कु. रेनू, ब्र.कु. अमृता, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. रुबी, ब्र.कु. दीपा व ब्र.कु. बहन भाई।

सोनीपत। गौशाला के प्रधान व पंचायती सेक्रेट्री अशोक खत्री द्वारा दिवंगत डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को श्रद्धांजली अर्पित करने के लिए आयोजित सर्व धर्म श्रद्धांजली सभा में उपस्थित हैं ब्र.कु. प्रमोद व अन्य धर्म प्रमुख।

जयपुर-राजापार्क। 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् परमात्म स्मृति में राज. के शिक्षा मंत्री कालीचरण सर्राफ, ब्र.कु. पूनम व अन्य।

माउण्ट आबू। स्वामी हरिप्रसाद जी एवं स्वामी मुक्तिनित्यानंदजी, स्वामीनारायण मंदिर,अमरेली गुजरात को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रमेश शाह।

पोखरा-नेपाल। योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए न्यायमूर्ति डम्बर बहादुर शाही, ब्र.कु. परनीता, ब्र.कु. गोमा, समाजसेवी सोभियत अधिकारी व अन्य।

सुन्दर नगर-हि.प्र.। 'खुशनुमा जीवन जीने की कला' कार्यक्रम के पश्चात् संसदीय सचिव सोहनलाल ठाकुर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शीला। साथ हैं ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू व ब्र.कु. शिखा।

भरतपुर-राज.। सांसद बहादुर सिंह का सेवाकेन्द्र में आने पर गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए ब्र.कु. अमर। साथ हैं भाजपा युवा मोर्चा के अध्यक्ष अरविन्दपाल सिंह, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. जयसिंह व अन्य।

रुड़की। ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम के दौरान नगरपालिका के पूर्व अध्यक्ष दिनेश कौशिक व भारतीय किसान यूनियन के गढ़वाल मंडल के अध्यक्ष संजय चौधरी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मीना,हरिद्वार।

दिल्ली। दिवंगत डॉ. ए.पी.जी. अब्दुल कलाम,पूर्व राष्ट्रपति,भारत को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय,एक्ज़ीक्युटिव सेक्रेट्री,ब्रह्माकुमारीज़।

गुड़गांव-से.17ए.। स्वच्छ भारत अभियान के तहत स्वच्छता कार्यक्रम में भाग लेते हुए ब्र.कु. ज्योति व अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

कुरुक्षेत्र-हरियाणा। कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी में ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. रीना, यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. डी.डी.एस.संधु व यूनिवर्सिटी के एम्प्लॉइज़।

पालम विहार-गुड़गांव। सशक्त नींव प्रोजेक्ट के अंतर्गत पुलिस कमिश्नर ऑफिस में प्रेस कॉन्फ्रेन्स के पश्चात् समूह चित्र में बायें से दायें ब्र.कु. नितिमा,फ्री लान्स राइटर, डॉ. अवधेष शर्मा,कंसल्टेंट साईकाट्रिस्ट, दिलीप भाई,कॉलम राइटर,टाइम्स ऑफ इंडिया, ब्र.कु. उर्मिल, नवदीप सिंह विर्क,पुलिस कमिश्नर, ब्र.कु. सुदेश, ब्र.कु. वीरेन्द्र,चार्टर्ड एकाउंटेंट व राजेश छेची,ए.सी.पी. क्राईम।

फोरबेसगंज-बिहार। बाइसवें जैन तेरापंथ तीर्थंकर जैनमुनी आचार्य महाश्रमण जी के आगमन पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. रुकमा व अन्य भाई बहनें।

सम्बलपुर-ओडिशा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् विधायक नागेन्द्र प्रधान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पार्वती। साथ हैं समय न्यूज़पेपर के एडीटर प्रफुल्ल दास व अन्य।

पवित्रता के प्रतीक हैं मोर 'मुकुटधारी'

श्रीकृष्ण का आह्वान करने के लिए पहले तो इस भारत के वासियों के आहार-व्यवहार-विचार के शुद्धिकरण की आवश्यकता है। आज तो भारत में घर-घर में 'काम' बसता है, सभी के मन में 'दाम' बसता है। श्री कृष्ण को पधारने के लिए तो कोई जगह ही खाली नहीं है, तब एक नगर के दो राजा कैसे हो सकते हैं? देखा जाता है कि 'सन्यासी' और 'महात्मा' लोग अपनी साधना अथवा पुरुषार्थ से पवित्रता को प्राप्त करते हैं। वे जन्म से ही महात्मा नहीं होते हैं। जब से महात्मा बनते हैं, तभी उनके चित्रों में उनके सिर के पीछे प्रकाश का ताज (प्रभामण्डल) अंकित किया जाता है।

भारत वर्ष के अंदर श्रीकृष्ण जन्मोत्सव को बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। `कृष्ण' नाम लेते ही अपने सामने हाथों में अथवा होठों पर मुरली धारण किये हुए मोर-मुकुटधारी एक दिव्य मूर्ति की झलक दिखाई देती है। हर एक माता अपने बच्चे को नयनों का तारा और दिल का दुलारा समझती है, फिर भी वह श्रीकृष्ण के बचपन के रूप को देखने की चेष्टा करती है। भक्तगण भी श्रीकृष्ण को `सुंदर',`मन-मोहन', `चित्तचोर', `मुरली मनोहर' इत्यादि नामों से याद करते हैं। वास्तव में श्रीकृष्ण का सौन्दर्य चित्त को चुरा ही लेता है। जन्माष्टमी के दिन जिस बच्चे को मोर-मुकुट पहनाकर, मुरली हाथ में देते हैं उस समय हम सभी का मन उस बच्चे के नाम, रूप, देश, काल को भूलकर कुछ क्षणों के लिए श्रीकृष्ण की ओर आकर्षित हो जाता है। सुंदरता तो आज भी बहुत लोगों में पाई जाती है, परंतु श्रीकृष्णसर्वांग सुंदर थे,

सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम थे। ऐसे अनुपम सौन्दर्य तथा गुणों के कारण ही श्रीकृष्ण की पत्थर की मूर्ति भी चित्तचोर बन जाती है। होठों पर सदा मुस्कान रहती और नयनों में सदा शान्ति छलकती है इसलिए कृष्ण को `नयनाभिराम' भी कहते हैं।

जन्माष्टमी के दिन श्रीकृष्ण के भक्त, उनके चरित्र के आधार पर झांकियां तैयार करते और रथ आदि सजाकर उन झांकियों को पूरे नगर में घुमाते हैं, परंतु यह नहीं सोचते कि श्रीकृष्ण का जीवन झांकियों के योग्य बना किस आधार पर? झांकियों को देखने के बाद हमें अपने जीवन में भी झांकना चाहिए कि जिस श्रीकृष्ण का हम आह्वान करते हैं, उनके समान हमने आने वाले जीवन में कहां तक श्रेष्ठता को लाया है? अतः श्रीकृष्ण - शेष पेज 11 पर...

माहौल के अनुरूप खुद को स्ट्रॉंग बनायें...

प्रश्नः- परीक्षा के समय नॉर्मल रहने के लाख उपाय किये जायें, लेकिन अंदर से बच्चे नॉर्मल नहीं होते हैं ना!

उत्तरः- अंदर जब नॉर्मल होंगे तब तो बाहर भी नॉर्मल अनुभव करेंगे। लेकिन हमने ही परीक्षा को इतना बड़ा बना दिया कि जिससे स्ट्रेस पैदा हो रहा है। पहले तो साल में एक बार परीक्षा होती थी। लेकिन अब परीक्षा का समय बढ़ता जा रहा है। अब कुछ सप्ताहिक टेस्ट होते हैं, फिर महीने भर का टेस्ट होता है, तो इस तरह से बच्चे का पूरा साल कैसा बीत रहा है, जैसे कि उसके अंदर एक बहुत बड़ा दबाव कार्य कर रहा हो। यह बच्चे के दिमाग के लिए बहुत ही नुकसानदायक होता है। वो बचपन के दिन जो हमारे लिए सबसे सुनहरा समय होता था, आज वही बच्चे उस अवस्था में कहते हैं कि मुझे बहुत स्ट्रेस है। अगर आप देखो कि जो बच्चे स्कूल में दाखिला के लिए जाते हैं तो उनको कितना स्ट्रेस से गुज़रना पड़ता है। तीन साल का एक बच्चा स्कूल में दाखिले के लिए साक्षात्कार देने जा रहा है। उसको माता-पिता बहुत दबाव दे रहे हैं क्योंकि माता-पिता बहुत ज़्यादा तनाव में हैं कि अगर उस स्कूल में उसको दाखिला नहीं मिला तो! ये जो भय पैदा हो रहा है यह हम बच्चे को उस आयु में ही उसके मन में डर की भावना बिठा देते हैं कि ये बहुत महत्वपूर्ण है, अगर नामांकन नहीं हुआ तो समझ लो तुम असफल हो जाओगे।

प्रश्नः- माता-पिता तो यही कहेंगे कि सारे स्कूल ऐसे हो गये हैं, शिक्षा का पूरा माहौल ही ऐसा हो गया है। अगर हम बच्चे को नहीं डांटे, उसे नहीं समझायें, उस पर दबाव नहीं डालें तो उसका उस स्कूल में नामांकन ही नहीं होगा।

ब्र. कु. शिवानी

उत्तरः- उसके लिए हमें क्या-क्या करना होगा, हमें पढ़ाना होगा, बहुत अच्छी तरह से तैयारी करानी होगी, उसके आत्मविश्वास को बढ़ाना होगा, सिर्फ हमें एक चीज़ नहीं करना होगा, उसके मन में डर पैदा नहीं करना होगा। सार में हम यही कह सकते हैं कि जो माहौल है, हमें उस माहौल के अनुरूप अपने आपको स्ट्रॉंग बनाना होगा। `स्ट्रेस' शब्द का हम दिन भर में कितना उपयोग करते हैं। अगर हम विज्ञान में स्ट्रेस शब्द को लें तो स्ट्रेस इज़ इक्वल टू प्रेशर डिवाइडेड बाई रेजिलेंस। बाहर प्रेशर तो पहले से ही है, स्कूल में इंटरव्यू के लिए गये, फिर मेरे माता-पिता गये नामांकन कराके वापस आ गये, कहा कि यह शहर के सबसे बढ़िया स्कूलों में से एक है और कहा, आपका नामांकन हो गया है और आपको अब स्कूल जाना है।

आज वो छोटे-छोटे बच्चे पता नहीं कितनी मेहनत से गुज़रते हैं। ठीक है दबाव बदल रहा है। हम बैठकर उसके बारे में शिकायत नहीं कर सकते। लेकिन जितना दबाव न्यूमेरेटर है ना बढ़ता जा रहा है। डिनोमिनेटर रेजिलेंस इन अवर स्ट्रेंथ। उस दबाव को सहन करने की मेरी अपनी आंतरिक शक्ति मेटल शीट्स होते हैं। इंडस्ट्रीज़ में जब हम जाते हैं तो अलग-अलग प्रकार के मेटल शीट्स होते हैं, हर मेटल शीट के ऊपर एक समान प्रेशर डाला जाता, लेकिन हर मेटल का स्ट्रेस फैक्टर अलग-अलग होता है क्योंकि उसकी इनर स्ट्रेंथ अलग-अलग है।

उसी तरह हममें से भी हरेक की अलग-अलग इनर स्ट्रेंथ है। दबाव हरेक के ऊपर एक समान है। लेकिन जिसकी जितनी इनर स्ट्रेंथ होगी, वो उस दबाव को उतनी अच्छी तरह से सहन कर पायेगा। आज क्या हो रहा है, दबाव तो बढ़ रहा है न्यूमेरेटर, डिनोमिनेटर पर ध्यान नहीं दे रहे हैं और भय क्रियेट करते जा रहे हैं। तो डिनोमिनेटर और घटता ही जा रहा है और न्यूमेरेटर बढ़ता जा रहा है डिनोमिनेटर घटता जा रहा है। स्ट्रेस का फैक्टर बढ़ता जा रहा है। क्योंकि परिवर्तन बहुत ही तीव्र गति से हो रहा है। जिसके कारण डिनोमिनेटर भी बहुत तीव्र गति से घटता जा रहा है और स्ट्रेस फैक्टर बहुत ही तीव्र गति से बढ़ता जाता है। और कभी-कभी तो वह हमारे कंट्रोल से बाहर ही चला जाता है। - क्रमशः

बहुत ही सहज है राजयोग...

आनंद की अनुभूति मानव की चाह है, एक खोज है, एक तलाश है और वो आनंद भौतिक सुखों में प्राप्त नहीं होता। यदि आप आनंदित होना चाहते हैं तो सबसे पहले रचनात्मकता को बढ़ाना पड़ेगा। आज मनुष्य आलसी है, आलस्य के कारण मनुष्य आनंद उन वस्तुओं में ढूंढ़ता है जो वस्तुएं निर्जीव हैं या फिर नश्वर हैं, वो अल्पकाल का, थोड़ी देर का मनोरंजन है, ना कि आनंद है। आनंद आत्मा की एक ऐसी अवस्था है जिसके बाद उसे कुछ पाने की इच्छा नहीं रहती।

पांचवे अंक में आपने देखा कि जब आत्मा आध्यात्मिक ज्ञान, पवित्रता आदि से भरपूर होती है तो उसे शांति व सुख प्राप्त होने लग जाता है और सच्ची शांति व सच्चा सुख मिलने के बाद आत्मा अपने निजी प्रेम स्वरूप को पहचानने लगती है।

आनंद

अब आत्मा प्रेम स्वरूप होती है, अर्थात् ज्ञान, पवित्रता, शांति, सुख के साथ मिलकर आत्मा अपने छठे गुण आनंद को निर्मित करती है। आत्मा का वास्तविक स्वरूप वैसे भी सत् चित् आनंद स्वरूप है। कई महान आत्माओं ने इस आनंद की प्राप्ति के लिए अपने घरबार छोड़ दिए और यहां तक कि उन्होंने अपने नाम के पीछे आनंद जोड़ दिया ताकि हर समय स्मृति रहे कि जीवन का लक्ष्य आनंद की अनुभूति करना है। आनंद अपने आप में सर्वोच्च इसलिए भी है क्योंकि आनंद जैसे गुण का कोई भी विपरीतार्थक शब्द नहीं है। जैसे सुख के साथ दुःख, प्रेम के साथ नफरत विपरीत अर्थ वाले शब्द हैं, लेकिन आनंद के साथ ऐसा कोई शब्द नहीं जुड़ता इसलिए आनंद को अलौकिक व ईश्वरीय माना गया है, तभी महान आत्माओं ने इसका अनुभव करना चाहा।

आनंद के बदले में हंसी और खुशी की तलाश में आज मनोरंजन के अनेकानेक साधन हमारे पास उप्लब्ध हैं। टी.वी., रेडियो पर बहुत सारे शो आ रहे हैं जो हमें मनोरंजन प्रदान करते हैं, हमें हंसाते हैं, लोग इसे आनंद का नाम देते हैं। जबकि ये तो टेम्प्ररी हंसी है जोकि गलत बात पर भी या द्विअर्थी (डबल मीनिंग) वाली बातों पर भी आ जाती है या यूं कहें कि दुःख में भी लोग हंसने की कोशिश करते हैं दिखाने के लिए। जबकि खुशी स्थायी है, वो किसी भी स्थिति में एकरस दिखने वाली चीज़ है। खुशी तब तक नहीं आएगी जब तक हम संतुष्ट नहीं होंगे, अपने आप को समझेंगे नहीं। आज हमारी खुशी बाहर की परिस्थितियों पर निर्भर है, बाहर सब ठीक है तो हम खुश हैं। बाहर थोड़ा भी कुछ गड़बड़ हो जाती है तो हमारी खुशी गायब हो जाती है। इसलिए अक्सर देखो माँ, बाप या फिर पती-पत्नी या और कोई भी आपस में यही बात करते हैं कि आप खुश हैं तो मैं भी खुश हूँ, इसका मतलब हमारी खुशी दूसरों पर निर्भर है। हमारी खुशी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थों पर निर्भर नहीं है, यह तो हमारी निजी सम्पत्ति है जो सच्चे ज्ञान के आधार से ही प्राप्त हो सकती है, क्योंकि जिस आधार से खुशी आज है वो विनाशी है। तो जैसे ही हम सच्चे रूप से खुश रहना शुरु हो जाते हैं तो वो हमारे आनंद की अवस्था मानी जाती है और आनंदित व्यक्ति कभी भी किसी बात की शिकायत नहीं करता। वो हमेशा आनंदित रहता है।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-6

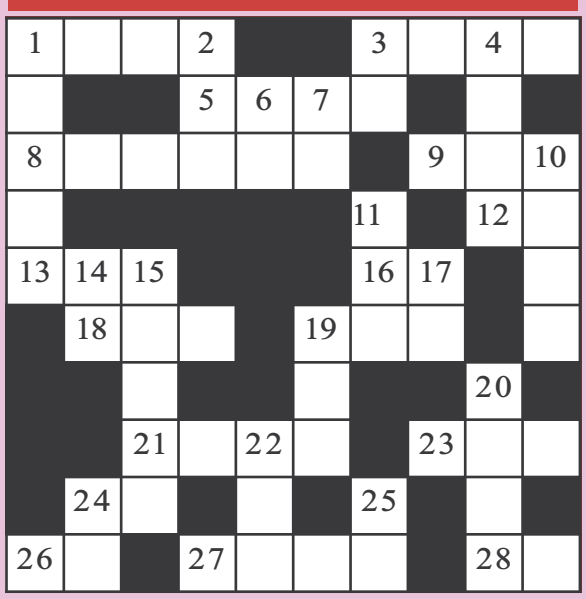

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. भाग्य का निर्माता, ब्रह्मा (2-3)
2. तुम बच्चों को योग में कभी.... नहीं है (3)
3. बाण, तालाब, सिर (2)
4. पतिंगा, शलभ (4)
6. आत्मा के निकलने के बाद शरीर को कहा जाने वाला शब्द, मुर्दा (2)
7. काग, कौआ, पक्षी (2)
10. बड़े नाम वाला, नामवर, प्रसिद्ध (4)
11. .... बच्चे बाप का नाम बाला करेंगे, लायक पुत्र (3)
14. बहादुर, शूर,शक्तिशाली (2)
15. माया बड़ी...है इससे सावधान रहो, शक्तिशाली (5)
17. रास्ता, पथ (2)
19. सम्पूर्ण, सारा (3)
20. मनोहर, सुन्दर, लुभायमान (4)
22. .... पुष्प समान पवित्र बनना है (3)
24. राय, विचार, सहमति (2)
25. जल, पानी (2)

बायें से दायें

1. गंगा को धरा पर लाने वाला, ब्रह्मा (4)
3. नज़दीकता, पास रहना (4)
5. एक्टर, हुनरबाज (4)
8. गणेश, विघ्न को नष्ट करने वाला (2-4)
9. भेजा गया, प्रस्थान कराना (3)
12. प्रसिद्धि, धाक, व्यक्ति/प्राणी का बोध सूचक शब्द (2)
13. गण्डक, कागज आदि पर अंकित मंत्र (3)
16. सम्पूर्ण, सारा (2)
18. देह अभिमान रूपी.... को हटाने से ही बाप से करेन्ट मिल सकती है (3)
19. स्तर, तल (3)
21. अग्नि शमन वाहन (4)
23. विचरण, घूमना-फिरना (3)
24. मग्न, लीन, खो जाना, नशे में चूर (2)
26. निशा,....जल्दी सोकर अमृतवेले 2 बजे से योग करो (2)
27. चुनौती (4)
28. सूर्य पुत्र, कुन्ती का बड़ा बेटा (2)

– ब्र.कु. राजेश,शांतिवन

भिवानी-हरियाणा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् हरियाणा के पूर्व मंत्री छत्रपाल सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रजनी।

गुवाहाटी-रूपनगर। आध्यात्मिक कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए विनोद कुमार पिपरसेनिया,आई.ए.एस.,चीफ सेक्रेट्री। साथ है श्रीमती पिपरसेनिया व ब्र.कु. शीला।

जैतारण-राज.। 'राजयोग' विषय पर चर्चा करने के बाद एस.डी.एम. घनश्याम शर्मा को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. छाया। साथ हैं ब्र.कु. लता।

शामली। स्नेह मिलन कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में पंजाब नेशनल बैंक के मैनेजर दिनेश भाई, ब्र.कु. राज बहन, ब्र.कु. सुरभि व बैंक स्टाफ।

तपा-पंजाब। आध्यात्मिक प्रदर्शनी समझाने के पश्चात् एस.एच.ओ. संजीव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ऊषा। साथ हैं डॉ. एल.आर. शर्मा।

नरकटियागंज-बिहार। रेलवे स्टेशन पर लगाई गई आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए अशोक कुमार,स्वास्थ्य निरीक्षक,पूर्व मध्य रेलवे, चर्च के फादर पीयूष जी, लाल बाबू राऊत,अधीक्षक,पूर्व मध्य रेलवे, ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. अबिता व अन्य।

दिल्ली-दिलशाद गार्डन। सात दिवसीय राजयोग कोर्स कराने के बाद समूह चित्र में अनंत ज्योति हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. मूलचंद, हॉस्पिटल स्टाफ व ब्र.कु. गीता।

कादमा-हरियाणा। नवचयनित आई.ए.एस. प्रमोद श्योराण को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. वसुधा।

वाराणसी-गायघाट। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान विधायक रविन्द्र जायसवाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मधु।

सीतापुर-उ.प्र.। 'परमात्म शक्तियों की अनुभूति' कार्यक्रम में चेयरमैन आशीष मिश्रा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. योगेश्वरी। साथ है ब्र.कु. उमा व अन्य।

कानपुर। उदयपुर गाँव आश्रम के श्री दिव्यांश जी महाराज को ज्ञानचर्चा के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. दीपा व ब्र.कु. ममता।

मंडी-चैल चौक। होम गार्ड के 6वीं बटालियन में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. प्रो. ओंकार। ध्यानपूर्वक सुनते हुए होम गार्ड के जवान।

कृष्ण-किरदार एक-पहलू अनेक

कृष्ण केवल एक किरदार मात्र नही परंतु एक सम्पूर्ण कथा, एक आख्यान है। कृष्ण को समझना इतना आसान भी नहीं है। कृष्ण की कई छटाएं हैं। कृष्ण ने अपनी कुछ छटाओं को अन्य कुछ किरदारों के साथ सम्पर्क में आते हुए खोला है। फिर चाहे कृष्ण-राधा हो, कृष्ण-मीरा हो, कृष्ण-कुंती हो, कृष्ण-द्रौपदी या सत्यभामा हो, कृष्ण-अर्जुन हो, कृष्ण-कर्ण हो, कृष्ण-सुदामा हो, कृष्ण ने हर संबंध में आते हुए अपनी अलग पहचान के साथ देखने और सुनने वालों को कुछ संदेश दिया है। इसलिए कृष्ण की विभिन्न लीलाओं का वर्णन हम सुनते और नाट्य रुपांतर के माध्यम से बड़ी रुचि से देखते आये है।

एक बार कृष्ण अपने आत्मीय सखा कर्ण से मिलने गये। हमने कृष्ण और कर्ण की मित्रता के बारे में बहुत कम सुना होगा, परंतु कृष्ण और कर्ण के बीच अन्तरंग मित्रता थी और वे घन्टो बिना कुछ कहे-सुने एक दूसरे के साथ समय बिताया करते थे। कर्ण कृष्ण को अपना एकमात्र और आत्मीय हितैषी समझता था। एक दूसरे को गहराई तक समझना यही तो मित्रता की मांग होती है। बहुत कम बोलते थे दोनों आपस में। बहुत समय के मौन के बाद अपने विचारों की गहराई से बाहर निकलते हुए कर्ण ने पुछा "पार्थ, तुम्हारी बासुरी का क्या रहस्य है?" कृष्ण ने अपने हाथ में थामी बासुरी को निहारते हुए कहा- " मित्र, देह की बासुरी में हृदय के अंतस की मधुर भावनाओं की फूंक मारने से हृदय की व्यथायें भी नादमुग्ध हो जाती हैं।" बड़ा ही मार्मिक जवाब दिया था कृष्ण ने। कर्ण अपने जीवन की व्यथाओं से जूझ रहा था, उसे स्वयं ही स्वयं का परिचय नहीं था। उसकी व्यथाओं को केवल कृष्ण ही समझ पाता था और इसलिए वह उसके साथ मौन में रहकर भी समय बिताता था, मानों उसकी व्यथाओं को अपने भीतर अवशोषित कर रहा हो।

हमने कृष्ण और अर्जुन की मित्रता के बारे में भी बहुत सुना है परंतु कृष्ण की कर्ण के साथ आत्मीय संबंध की यह छटा ही कुछ निराली है।

एक बार अर्जुन ने कृष्ण से पूछा " आप हमेशा कर्ण की दानवीरता की तारीफ करते हैं, परंतु मेरे भ्राता युधिष्ठिर भी तो दान और धर्म के लिए जाने जाते हैं। तो आप कर्ण को सबसे श्रेष्ठ कैसे कह सकते हैं?

" कृष्ण ने कहा, तुम्हारे प्रश्न के उत्तर की खोज हम कल करेंगे। दूसरे दिन दोनों ब्राह्मण के वेश में युधिष्ठिर के दरबार में

पहुंचे और उनसे भोजन बनाने के लिए चंदन की लकड़ी की माँग की। युधिष्ठिर ने अपने सैनिकों को जंगल में भेजा, लेकिन पिछले दिन की बारिश के कारण सारी लकड़ियां गीली हो चुकी थीं, अतः उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ा। युधिष्ठिर की अ-समर्थता देखकर दोनों ब्राह्मण वेशधारी कृष्ण और अर्जुन ने कहा कि कोई बात नहीं, हम कल भोजन के लिए आयेंगे। उसके बाद दोनों कर्ण के पास पहुंचे और वही मांग की। कर्ण को ज्ञात था कि इस समय जंगल की सभी लकड़ियां गीली होंगी, अतः उसने कुछ क्षण सोचा, अपने अतीथियों को स्थान ग्रहण करने को कहा। पश्चात् अपना तीर कमान लेकर अपने महल का दरवाज़ा तोड़कर उसकी निकली हुई चंदन की लकड़ी लेकर दोनों ब्राह्मणों के सम्मुख रखी और कहा महाराज! आप जितनी लकड़ी इस्तेमाल करना चाहें अवश्य करें। ईश्वर अपने हर बच्चे की विशेषताओं को अच्छी रीति जानते हैं और उनका उचित सम्मान भी करते हैं। परमात्मा की महिमा अगाध है और उनका हर आत्मा को जानने और समझने का तरीका भी अलग है।

महाभारत और रामायण जैसी सर्व कथाओं के पात्र हम सब के जीवन की परछाई मात्र हैं। वे सब वही कहते और करते हैं जो हम इस समय कर रहे हैं। वे हमारे रूपक मात्र हैं। परंतु कृष्ण परमात्मा शिव का रूपक है। शिव तो निराकार है, उनकी लीलाओं को हम साकार स्वरूप में अनुभव कर सकें, इसलिए उन्हें कृष्ण के पात्र के साथ जोड़ा गया है। भगवान के अगाध चरित्रों का दर्शन कृष्ण के किरदार से होता है।

सेन फ्रान्सिसको। अनुभूति रिट्रीट सेंटर में 'कमिन्ग होम:द पाथ टू द लाइट' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुदेश,जर्मनी।

मंगोलिया। टेलिकॉम कम्पनी में 'हार्मनी इन रिलेशनशिप' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सुधा,मॉस्को व कम्पनी के स्टाफ।

टोरोन्टो। काउंसिल जेनरल ऑफ इंडिया अखिलेश मिश्रा के साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. सुदेश,जर्मनी। साथ हैं ब्र.कु. शाशि व अन्य।

मलेशिया-कोटा किनाबालू। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू व वहां के ब्र.कु. भाई बहनें।

क्या आज सभी को कृष्ण की तलाश नहीं है?

यदि आप बहुत पैसा कमाते हैं और आपको उन पैसों के साथ कहीं बंद कर दिया जाए तो क्या होगा? अच्छा नहीं लगेगा, क्योंकि आप उससे कुछ तलाशते हैं, कुछ खरीदेंगे, जिससे आपको लगता है, जोकि ऐसा है नहीं, सिर्फ लगता है कि इससे हमें सुख मिलेगा, आनंद मिलेगा। लेकिन जैसे ही वो चीज़ आपके पास आई, आप तुरंत किसी दूसरी चीज़ की तलाश में जुट गए। अब आप देखें कि आप सब कुछ `कल' में ढूंढ़ रहे हैं। जो हमने देखा नहीं है, लेकिन संभावना है! शायद मिल जाए। तो यहां भी अल्टीमेट या अन्तिम सुख या आनंद की तलाश है ना!

कृष्ण सत, चित, आनंद स्वरूप का रूपक है...

आप देखिए, छोटे से `कृष्ण' की आप सभी तलाश कर रहे हैं ना! क्योंकि वो सम्पूर्ण पवित्र है और उसे देखने से ही चित्त शान्त, मन गदगद और आनंदित हो जाता है। हमारा तो यही कहना है कि सभी धर्मों ने भी अपने-अपने आदर्श बनाए हुए हैं। आदर्श उसे कहते हैं जिसमें हम अपना दर्शन कर सकें। जिनमें सम्पूर्ण आकर्षणमय, खूबियां या गुण जुड़ जाये, तो वह आदर्श हो जाता है, वो मनुष्य देवतुल्य हो जाता है, वही कृष्ण भी थे।

'कृष्ण' को समझते हैं...

कृष्ण शब्द `कृष' धातु से निकला है, जिसका अर्थ है आकर्षित करना। अब आप ही अंदाज़ा लगाएं कि आकर्षित कौन करेगा! जो बहुत ही ज़्यादा गुणवान हो, सुखकारी हो। इतनी वृहद सृष्टि है, अगर एक ही कृष्ण होगा तो सभी तो उससे आनंदित नहीं हो पायेंगे। हो सकता है कि हम गलत हों, क्योंकि आप उन्हें परमात्मा का स्वरूप मानते हैं! बात भी सही है,वह परमात्मा का स्वरूप है, परमात्मा नहीं है। क्योंकि परमात्मा को देह और दुनिया से परे दिखाया गया है। वैसे तो यह भी कहा जाता है कि जिसने भी प्रकृति के साथ अपने आप को जोड़ा, उसकी प्रकृति उम्र के साथ या यूं कहें कि समय के साथ घटेगी अवश्य! ऐसा शास्त्रगत उल्लेख भी मिलता है।

कृष्ण के जन्म को देखते हैं...

भाद्रपद मास की अष्टमी को कृष्ण का जन्म होता है। सावन मास अच्छा मौसम माना जाता है जिसमें ज़्यादा गर्मी नहीं होती क्योंकि बारिश शुरु हो चुकी होती है। लेकिन उमस भरा मौसम का होना किसको भाता है! यदि इसको हम वैज्ञानिक रूप से देखें तो पाएंगे कि ऐसे में किसी का जन्म होना, वो भी सबको आनंदित करे, अर्थात् कष्टकारी परिस्थितियों पर विजय का प्रतीक ही तो कृष्ण का जन्म है। जन्म के समय बारिश, आंधी, तूफान, बिजली आदि को कड़कते दिखाया गया है, उसमें भी वो आनंदित है, खुश है।

कृष्ण हम सभी की एक मानसिक उपज है। यदि हमें आकर्षित करने वाला बनना है तो हमें तपना होगा, थोड़ा सहन भी करना होगा। हमारा उपहास भी होगा, हमपर लोग हँसेंगे भी, लेकिन इन सबसे पार पा कर ही हमारा चित्त अर्थात विवेक जागृत होगा।

आपने जब एक बार इस सत्य को समझा, उसे विवेक से परखा, समझो आपको हर बात का रहस्य समझ में आ गया। आप उसके बाद किसी भी बात से दुःखी व परेशान नहीं होंगे। आप भी कृष्ण की तरह आनंदकारी बन जाएंगे। सभी आपको अपना आदर्श बना लेंगे ।

हमारा अनुभव तो यही कहता है कि सभी को इस पूरे विश्व में तीन की तलाश है, सत, चित, आनंद की, अर्थात् सत्चिदानंद की, और हम मानें या ना मानें, हमारा पूरा ब्रह्माण्ड और ब्रह्माण्ड के समस्त चेतन प्राणी को उस सत्य की खोज है। कहाँ है वो सत्य, कहाँ है वो आनंद! ढूंढ़ तो सभी रहे हैं पर कुछ भी मिल नहीं रहा।

यदि इसके विस्तार को देखें तो पाएंगे कि एक अन्तिम सत्य या अल्टीमेट ट्रूथ को सभी पाना ही चाहते हैं, जिसके आगे कुछ ना हो, बस वहीं ठहर जाएं। चाहे विज्ञान को आप लें या फिर आध्यात्मिकता या फिर ज्योतिष, या तन्त्र-मन्त्र, सभी उस सत्य को ढूंढ़ रहे हैं। क्या जो हो रहा है, वो ऐसे ही है, या फिर उसका कोई वजूद है? जो हो रहा है उसका कोई कारण तो होगा ना! बस उसी की तलाश है। सत्य ही तो है!

आगरा-शास्त्रीपुरम। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर मीडियाकर्मियों के लिए आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ. प्रेरणा, डॉ. सुषमा, डिग्री कॉलेज की प्रिंसीपल, ब्र.कु. शान्तनु,माउण्ट आबू, ब्र.कु. कमल दीक्षित, ब्र.कु. सुशान्त,माउण्ट आबू, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. मधु तथा अन्य।

शिलाँग। बी.एस.एन.एल. ऑफिस में आयोजित 'स्ट्रेस मैनेजमेंट वर्कशॉप' में उपस्थित हैं डी.पी. सिंह,सी.जी.एम.,बी.एस.एन.एल., ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. डॉ.धवल सूद व वहां के अधिकारी व कर्मचारीगण।

उकलाना मण्डी-फतेहाबाद। समाजसेवी डॉ. रामखेलावन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दीपक,माउण्ट आबू, ब्र.कु. अजीत, ब्र.कु. किरण व अन्य।

मथुरा। जी.एल.ए. यूनिवर्सिटी के डायरेक्टर नीरज अग्रवाल को ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात व नारीत्व दर्शन की डी.वी.डी. भेंट करते हुए ब्र.कु. कुसुम व ब्र.कु. सुनीता। साथ हैं यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रो. डी.एस. चौहान व यूनिवर्सिटी के प्रो. वाइस चांसलर प्रो. आनंद मोहन अग्रवाल।

कोटद्वार। योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सुमन, विधायक दिलीप सिंह रावत, पूर्व विधायक शैलेन्द्र सिंह रावत, पूर्व नगरपालिका अध्यक्षा शशि नैनवाल तथा अन्य।

मऊ-उ.प्र.। रामायण मेले में जेल कारागार मंत्री बलराम यादव को ईश्वरीय संदेश देने के बाद ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विमला।

मण्डी-गोविंद गढ़(पंजाब)। योग दिवस पर हरप्रीत सिंह,प्रिंस प्रेस क्लब के प्रेसिडेंट व को-ऑपरेटिव हाऊस बिल्डिंग सोसायटी के प्रधान,एम.सी. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. साक्षी। साथ हैं ब्र.कु. मिनाक्षी व योगा ट्रेनर विशाल बत्रा।

आस्का-ओडिशा। व्यसनमुक्ति के कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. पार्वती। मंचासीन हैं ब्र.कु. डॉ. सचिन परब,संयोजक,डी एडीक्शन कैम्प, दीपराज मोहन्ती,विधायक, ब्र.कु. मंजू व ब्र.कु. सत्यप्रिया।

बहादुरगढ़ से.-2(हरियाणा)। नवनिर्मित भवन 'विश्व शान्ति भवन' का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी। साथ हैं अन्य भाई बहनें।

भुवनेश्वर-ओडिशा। ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षा प्रभाग द्वारा आयोजित 'वैल्यु एज्युकेशन एंड स्पीरिच्युअलिटी-द नीड ऑफ द आवर' कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ. अशोक कुमार महापात्रा,डायरेक्टर,एम्स। मंचासीन हैं ब्र.कु. मृत्युंजय,वाइस चेयरमैन,शिक्षा प्रभाग, ब्र.कु. डॉ. निरुपमा,ज़ोनल को-ऑर्डिनेटर,शिक्षा प्रभाग, ब्र.कु. लीना, ब्र.कु. प्रफुल्ला व ब्र.कु. दुर्गेशनंदिनी।

दिल्ली-शक्तिनगर। 'नवचेतना बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' के समापन अवसर पर समूह चित्र में ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. डॉ. मोहित गुप्ता, ब्र.कु. एंजेल, प्रतिभागी बच्चे व अन्य।

फरीदाबाद से.11 सी.। टाऊन पार्क से.12 में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में योगाभ्यास करते ब्र.कु. भाई बहनें। कार्यक्रम में शरीक हुए मौलाना जमालुद्दीन,राष्ट्रीय अध्यक्ष,ऑल इंडिया मुस्लिम मेव विकास परिषद, ब्र.कु. उषा व ब्र.कु. मुन्नी।

हाथरस-आनंद पुरी कॉलोनी। एन.सी.सी. कैडेट्स के वार्षिक शिविर में पर्यावरण संबंधी कार्यक्रम के पश्चात् कर्नल आर.के. कौशल को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. शान्ता।

पोखरा-नेपाल। नेपाल के भूकम्प प्रभावित इलाकों का जायज़ा लेने के दौरान समूह चित्र में ब्र.कु.करुणा,चीफ ऑफ मल्टीमीडिया,ब्रह्माकुमारीज़, ब्र.कु. डॉ.प्रताप मिड्ढा,मेडिकल डायरेक्टर,ग्लोबल हॉस्पिटल माउण्ट आबू, ब्र.कु.शैलेष व अन्य।

भाग्य लिखने का अधिकार स्वयं मनुष्य को

ये तो सभी लोग मानते हैं कि कर्म से भाग्य बनता है। अब जो कर्म मैंने किया, उससे जो भाग्य मैंने प्राप्त किया उसके प्रति यदि कोई ईर्ष्या करता है, ईर्ष्या के वश उल्टी-सीधी बातें करता है मेरे विषय में तो उसके ईर्ष्या करने से और उल्टी-सीधी बातें करने से क्या मेरा भाग्य परिवर्तन हो जाएगा? जो भाग्य हमने अपने कर्मों से बनाया है, उसको मिटाने की ताकत किसी की भी नहीं है। स्वयं भगवान भी उस भाग्य को मिटा नहीं सकते हैं फिर इंसान की क्या सामर्थ्य है? उसको अगर मिटाने की ताकत है तो किसी और में नहीं, सिर्फ मेरे में है। किसी के ईर्ष्या करने से मेरा भाग्य मिटने वाला नहीं है। ये याद रखो! निश्चिंत रहो। द्वंद्व में नहीं आओ कि ये ऐसा बोल रहा है। ये वैसा बोल रहा है, ये ऐसा कर रहा है। ये वैसा कर रहा है। इसलिए मेरे भाग्य पर प्रभाव पड़ रहा है... नहीं। उसके बोलने से कभी भी प्रभाव नहीं पड़ता है। जो भाग्य हमने, अपने कर्मों से प्राप्त किया है, वह किसी इंसान की ताकत नहीं, जो उसको खत्म कर सके। उसको खत्म करने की शक्ति सिर्फ और सिर्फ मुझमें है। वो मैं कैसे खत्म करती हूँ? उसके उल्टे-सीधे बोल के आधार से, जब मैं अपने मन में नकारात्मक भावनाओं को उत्पन्न करती हूँ, नकारात्मक विचारों को क्रियेट करती हूँ और उन नकारात्मक विचारों की रचना करने से जो कर्म हमने आरंभ किए, उसी से वो भाग्य में लकीर लगने लगती है। मेरे अपने विचार जब गलत शुरू हो जाते हैं, निगेटिव जब चलने शुरू हो जाते हैं, तब हम उसको लकीर लगाना आरंभ करते हैं। इसलिए हमें अपने विचारों पर बहुत ध्यान देना है। क्योंकि जैसा आप सोचेंगे वैसा कर्म करेंगे। विचारों के आधार पर ही व्यवहार होता है। विचारों के आधार से ही भावनायें जागृत होती हैं। यदि विचार गलत हो गये तो भावनायें गलत हो जायेंगी। भावनायें गलत हो गयीं तो व्यवहार गलत होंगे। यह गलत व्यवहार हमारे भाग्य को लकीर लगाना आरंभ कर देता है। बाकी उसके बोलने से मेरा भाग्य बदल नहीं सकता। इसलिए आप निश्चिंत रहो, द्वंद्व में नहीं आओ। मुझे तो किसी के प्रति ईर्ष्या नहीं है, लेकिन जब दूसरों को मेरे प्रति ईर्ष्या आती है तो मैं क्या करूँ? हमें अपने विचारों के ऊपर बहुत अटेंशन देना है। जितना नकारात्मक विचार हम करेंगे उतना हम अपनी आंतरिक परेशानियों को बढ़ाते हैं। एक बार एक प्रोफेसर अपने स्टूडेंट को कुछ सिखाना चाहते थे। वो एक खाली चाय का मग लेकर आये और सभी स्टूडेंट को एक-एक मग पकड़ा दिया और कहा कि सभी स्टूडेंट खड़े हो जाओ और इस मग को ऐसे पकड़ो। सभी स्टूडेंट खड़े हो गये और मग को पकड़ लिया। प्रोफेसर अपना कुछ काम करने लग गए, पाँच मिनट बीते... दस मिनट बीते... प्रोफेसर कुछ बोल ही नहीं रहे हैं। आखिर एक विद्यार्थी से रहा नहीं गया, उसने पूछ ही लिया कि सर, ये कितनी देर तक पकड़ना होगा? सर ने कहा, क्यों कुछ प्राब्लम है इसको पकड़ने में? उसने कहा, हाथ दर्द कर रहा है। तो सर ने कहा, क्यों सिर्फ पाँच मिनट में इस मग का वजन बढ़ गया क्या जो हाथ दर्द करने लगा। विद्यार्थी ने कहा, नहीं मग का वजन तो नहीं बढ़ा है। लेकिन ये तो पता चले कि इसे कितनी देर तक पकड़कर खड़े रहना है। तो सर ने कहा कि अगर मैं कहूँ कि एक घंटा तक पकड़कर खड़े रहो तो, उस विद्यार्थी ने कहा, सर ये हाथ शून्य हो जायेगा। सर ने कहा कि अगर मैं कहूं कि पाँच घंटे पकड़कर खड़े रहो, तो कहा कि ये हाथ एकदम ऐसा ही रह जायेगा। सीधा होना कठिन हो जायेगा। सर ने फिर कहा कि अगर मैं कहूं कि चौबीस घंटे तक ऐसे पकड़कर खड़े रहो, तो कहा कि शायद पैरालाइज़्ड हो जायेगा। हाथ काम करना बंद कर देगा। तो सर ने पूछा कि फिर क्या करना चाहिए? तो कहा कि खाली मग को पकड़कर रखने से क्या फायदा? उसको रख देना चाहिए। तो सर ने कहा कि यही बात तो मैं समझाना चाहता हूँ। जो फालतू बातों को पकड़कर रखते हैं उसका मतलब क्या है? एक घंटा नहीं, एक दिन नहीं, एक-एक हफ्ता, एक-एक महीना पकड़कर रखते हैं और कोई-कोई तो फालतू बातों को एक-एक साल तक पकड़कर रखते हैं। उसने मेरे साथ ऐसा किया था, उसने मेरे साथ वैसा किया था, तो क्या ये दिमाग शून्य नहीं हो जायेगा! ये दिमाग पैरालाइज़्ड नहीं हो जायेगा! फालतू बातों का क्या करें? छोड़ो, बिना मतलब की बातों को दिमाग में पकड़ कर रखने से कोई फायदा नहीं है। इसलिए कोई ऐसा बोल रहा है, कोई ऐसा कर रहा है, फालतू बातों को पकड़ने से फायदा क्या है? इसलिए फालतू बातों को छोड़ो।

- क्रमशः

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

वैज्ञानिकों की महान खोज : सर्वश्रेष्ठ आहार – शाकाहार

1. `शाक' शब्द संस्कृत की `शक्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है – योग्य होना, समर्थ होना, सहज करना। शक् धातु से शक्नोति इत्यादि शब्द बने हैं। शाक शब्द का अर्थ है- बल, पराक्रम, शक्ति एवं शक्त के मायने हैं - योग्य, लायक, ताकतवर। इस तरह शाकाहार का अर्थ हुआ ऐसा आहार जो मनुष्य की योग्यताओं का विकास करे और उसे बलशाली तथा पराक्रमी बनाये।

2. वेजीटेरिन शब्द लेटिन भाषा वे `वेजीटस' शब्द से जन्मा है, जिसका अर्थ है - स्वस्थ समग्र, समर्थ, विश्वस्त, ठोस परिपक्व, जीवन्त, ताज़ा। फ्रांसीसी में `वेजीटेबल' शब्द का अर्थ है जीवन- संचारक, जीवन से भरपूर।

3. महान् वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्सटाईन विशुद्ध शाकाहारी थे, वे कहा करते थे कि शाकाहार की हमारी प्रकृति पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

4. सन् 1945 में रसायन शास्त्र विषयक नोबल पुरस्कार से सम्मानित डॉ. अर्तुरी वर्तनेन (हेलिंस्की, फिनलैंड में जैव रासायनिक शोध संस्थान के निर्देशक) ने कहा है कि दुग्ध शाकाहारियों का फल, साग-सब्जी, दाल, वसा, न्यूनित दूध आदि से तमाम आवश्यक पोषक तत्व सहज ही मिल सकते हैं।

5. अमेरिका फूड एंड न्यूट्रीशन बोर्ड की नेशनल रिसर्च कौंसिल ने साफ कहा है कि

अधिकांश पोषण विज्ञानी इस तथ्य से सहमत हैं कि यदि शाकाहार का यथोचित संयोजन किया जाए तो वह स्वयं में सम्पूर्ण/पर्याप्त आहार है। दुनिया के प्रायः सभी मुल्कों में शुद्ध शाकाहारियों ने अपना स्वास्थ्य उत्तम प्रकार से बनाये रखा है।

6. एक वैज्ञानिक खोज ने यह सिद्ध कर दिया है कि `शाकाहार में मांस से पांच गुणा अधिक शक्ति है' – ओरियन्टल वॉचमेन पूना पृ.35

7. संयुक्त राज्य अमेरिका में डेढ़ करोड़ शाकाहारी लोग 1999 तक हो चुके थे। गेलप पोल अनुमान के अनुसार यू.के. में हर हफ्ते 3 हज़ार लोग शाकाहारी बन जाते हैं। जिनकी संख्या करोड़ों में पहुंच चुकी है।

8. शाकाहारियों का अच्छा स्वास्थ्य उनके आहार का परिणाम है, यह विचार बर्लिन वेजीटेरियन स्टडी की जांच पड़ताल का है। जर्मन स्वास्थ्य दफ्तर के सामाजिक औषधि और महामारी विज्ञान संस्थान ने 1985 में उपर्युक्त अध्ययन शुरु किया था। अध्ययन के अनुसार शाकाहारियों का संतुलित स्वास्थ्य उसके मांस मछली आदि न खाने और मोटे रेशे वाले तथा कम कोलेस्ट्रॉल वाले अन्न उत्पादनों के सेवन करने का परिणाम है।

9. वीगन (शुद्ध शाकाहारी) जीवन शैली को एक वाक्य में परिभाषित करते हुए क्रूएल्टी फ्री गाइड टू लन्दन के संपादक स्लेक्स बुर्क ने कहा है कि ``शाकाहारी न तो किसी जन्तु के किसी अन्तर्वर्ती भीतरी भाग को खाता है और न ही उसके किसी बाहरी भाग को ओढ़ता-पहनता है।''

कथा सरिता

खुदा के साथ सुरक्षित इंसान ... ?

एक बार उमर ख्य्याम अपने एक शिष्य के साथ बीहड़ से गुज़र रहे थे। नमाज़ पढ़ने का समय हुआ तो दोनों ने नमाज़ पढ़ने के लिए ठीक-ठाक जगह देखनी शुरु कर दी। लेकिन तभी उन्हें कहीं दूर से आती शेर की आवाज़ सुनाई दी। उसे सुनकर शिष्ट घबरा गया और तुरंत नज़दीक के एक पेड़ पर चढ़ गया। लेकिन खय्याम तो अपने में डूबे थे। उन्होंने जैसे वह आवाज़ सुनी ही नहीं थी। वह एकाग्र होकर नमाज़ पढ़ने में लग गए। कुछ देर बाद शेर सचमुच वहां आ पहुंचा। लेकिन आश्चर्य, वह कुछ देर रुक कर चुपचाप आगे निकल गया।

उसके चले जाने के बाद शिष्य पेड़ से नीचे उतर आया। इस तरह नमाज़ खत्म होने के बाद दोनों आगे बढ़े। थोड़ी देर बाद जब उमर खय्याम को एक मच्छर ने काटा, तो उसे मारने के लिए उन्होंने अपने गाल पर ज़ोर से चपत लगाई। यह देख वह शिष्य बोला, `गुरुदेव! अभी-अभी जब शेर आपके करीब आया था, तब आप बिल्कुल नहीं घबराए, लेकिन एक मच्छर के काटे जाने पर आपको इतना गुस्सा आ गया!' खय्याम ने उत्तर दिया, `तुम कहते तो ठीक हो, लेकिन यह भूल रहे हो कि जब शेर आया था तब मैं खुदा के साथ था, जबकि मच्छर द्वारा काटे जाने के समय मैं एक इंसान के साथ था। यही वजह है कि मुझे शेर से डर नहीं लगा और मैं एक मच्छर से घबरा गया। इंसान भगवान के साथ हो तो हमेशा सुरक्षित रहता है। जबकि मनुष्य के साथ उसे कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है।' शिष्य समझ गया कि खुदा के साथ का असल अर्थ क्या है। उससे इंसान की हिम्मत बढ़ जाती है।

आधार सफलता का

पांच-छह साल का एक लड़का एक दिन अपने साथियों के साथ आम के बगीचे में चला गया। वहां सभी बच्चे आम तोड़ने लगे। लेकिन वह लड़का चुपचाप एक कोने में खड़ा रहा। साथियों के उकसाने पर भी उसने आम तो नहीं तोड़े, लेकिन इसी बीच गुलाब के पौधे पर खिले एक सुंदर फूल पर उसकी दृष्टि पड़ी। गुलाब का वह फूल देखकर उसका मन ललचा उठा। उसने चुपचाप वह फूल तोड़ लिया। ठीक उसी समय बगीचे का माली वहां आ धमका।

माली को देखकर सभी लड़के उड़न छू हो गए। लेकिन वह लड़का घबराहट में वहीं खड़ा रह गया। माली ने उसे देखते ही पकड़ लिया और पूछा, `बता, कहां है तेरा घर। चल ज़रा मैं तेरे बाबू जी से तेरी करतूत बताकर आता हूँ।' माली की यह बात सुनकर लड़का मायूस हो गया। उसने सहमते हुए धीमे स्वर में कहा, `मेरे पिताजी नहीं हैं।' लड़के का भोला-भाला चेहरा और सरल आँखें देखकर माली बड़ा प्रभावित हुआ। उसने उसे प्यार से समझाया, `फिर तो तुम्हें ऐसे काम बिल्कुल नहीं करने चाहिए, क्योंकि तुम्हें तो पिटाई से बचाने वाला भी कोई नहीं है। कभी कोई चीज़ अच्छी लगे तो उसके मालिक से मांग लेनी चाहिए। इस तरह लेना तो चोरी कहलाता है।'

लड़के को लगा जैसे माली के रूप में उसके जीवन को सही दिशा बताने वताने वाला कोई गुरु मिल गया हो। उसने तभी अच्छा इंसान बनने का संकल्प कर लिया। माली की बात को उसने ऐसे गांठ बांध लिया कि उसका जीवन एक मिसाल बन गया। यह लड़का लाल बहादुर शास्त्री था, जो आगे चलकर अपनी सच्चाई, ईमानदारी, सेवा भावना और कर्त्तव्यनिष्ठता के बल पर भारत देश के प्रधानमंत्री बनें।

गलतियां आदत न बन जायें

एक बार गोपाल राव अपने बड़े भाई गोविंद राव के साथ कबड्डी खेल रहे थे। गोविंद राव विरोधी टीम में थे। गोविंद राव कबड्डी खेलते हुए गोपाल राव के खेमे की तरफ आए और उन्होंने गोपाल राव को इशारा करके कहा कि वे उन्हें न पकड़ें और नंबर लेने दें, परंतु गोपाल राव को यह बात ठीक नहीं लगी। उन्होंने खेल को पूरी न्याय भावना के साथ खेलना उचित समझा और अपने बड़े भाई गोविंद राव को पकड़ने के लिए पूरी ताकत लगा दी। आखिरकार उन्होंने उसे पकड़ ही लिया। इस तरह गोविंद राव आऊट हो गए। यह बात गोविंद राव को अच्छी नहीं लगी और उन्होंने घर लौटने पर गोपाल राव से कहा, `गोपाल, जब मैंने तुझे मना किया था कि मुझे मत पकड़ना, तब भी तूने मुझे पकड़ ही लिया। तू मेरा कैसा भाई है रे, जो अपने बड़े भाई की इतनी सी बात भी न मान सका।' गोविंद राव की बात सुनकर गोपाल राव अपने भाई के आगे आकर बोले, `भौय्या, आपके प्रति मेरे मन में पूरी श्रद्धा है। आप जो भी कहेंगे, वह मैं अवश्य करके दिखाऊंगा, चाहे इसके लिए मुझे अपनी जान की बाज़ी ही क्यों न लगानी पड़ जाए। किंतु मैं बेईमानी नहीं कर सकता।

खेल भी हमें पूरी ईमानदारी व निष्ठा से खेलना चाहिए क्योंकि खेल-खेल में अपनायी गई भावना ही आगे हमारे विचारों व भावों को पुष्ट करती है। मैं नहीं चाहता कि बड़े होने पर मेरे अंदर झूठ बोलने या गलत कार्य करने की आदत पड़ जाए।' अपने से पांच साल छोटे भाई की इस बात को सुनकर गोविंद राव ने उसी समय अपने को सुधारने का प्रण कर लिया।

प्रसन्नता का आधार

एक दिन महात्मा बुद्ध के पास सम्राट श्रेणिक आए और उनसे पूछने लगे - `हमारे राजकुमार को हर तरह की सुविधाएं मिली हैं। बड़े आवास में रहते हैं, सेवकों की पूरी फौज है, फिर भी वे प्रसन्न नहीं रहते। दूसरी तरफ आपके ये भिक्षु हैं, ये पदयात्रा करते हैं, जैसा मिल जाता है, खा लेते हैं, जहां जगल मिल जाए, रह लेते हैं, फिर भी इनके चेहरे पर हमेशा प्रसन्नता बनी रहती है। इसका कारण क्या है?'

बुद्ध ने उत्तर दिया, `प्रसन्नता खोजनी हो तो जिसके पास कुछ भी न हो, उसमें खोजो। जिसने संकल्प करके सब कुछ छोड़ दिया, वही प्रसन्न रह सकता है। भिक्षुक कभी प्रसन्न नहीं होगा, क्योंकि उसने छोड़ा नहीं है। वह तो अभाव में ही जीवन जी रहा है। अभाव का जीवन जीने वाला कभी प्रसन्न नहीं रह सकता। चिंताएं हर क्षण घेरे रहती हैं। जिसने जान-बूझ कर छोड़ा है, वह प्रसन्न रह सकता है। दो बातें हैं - एक छोड़ना और एक छूटना। जिसे प्राप्त नहीं है, वह त्यागी नहीं। त्यागी वह है जो स्वतंत्र मन से त्याग कर दे। साधन संपन्न व्यक्ति भी प्रसन्न नहीं रह सकता। उसे संपत्ति की सुरक्षा की चिंता सताती है। वह हमेशा भयभीत रहता है। अभय वही हो सकता है जिसने स्वेच्छा से त्याग किया हो।' श्रेणिक को अपनी जिज्ञासा का समाधान मिल गया। ऐसा था महात्मा बुद्ध का ज्ञान और आमजन को उनका त्याग का संदेश। हालांकि वह जीवन में मध्यम मार्ग के पक्षधर थे, किंतु वह मानते थे कि बिना त्याग के व्यक्ति सुखी नहीं हो सकता। यदि अभाव है तब भी चिंता है और यदि ज़रूरत से बहुत ज़्यादा है तो भी उसकी सुरक्षा की चिंता है।

शांतिवन-आबू रोड। ब्र.कु. पूनम,इन्दौर के भव्य समर्पण समारोह के अवसर पर उनके साथ मंचासीन हैं राजयोगिनी दादी जानकी, दादी रतनमोहिनी व ब्र.कु. मोहिनी।

पाँवटा साहिब-हि.प्र.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् कृपाल शिला गुरुद्वारे की प्रबन्धक बलविन्दर कौर को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. निशा।

बौद्ध-ओडिशा। 'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी समाज' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ. रामचन्द्र राउत,ए.डी.एम.ओ., ब्र.कु. पार्वती, डॉ. रामचरण प्रधान, ब्र.कु. गौरी, ब्र.कु. सरोज व अन्य।

खंडपडा-ओडिशा। आध्यात्मिक स्नेह मिलन में अपने विचार व्यक्त करते हुए पूर्व एन.ए.सी. किशोर दास। साथ हैं ब्र.कु. गीता, लेक्चरार जगदीश महापात्र व डॉ. गोपषंधु।

खानपुर-राज.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान सरपंच ललित राठौर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. तपस्विनी।

रावट्सगंज। योग दिवस पर आयोजित 'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी समाज' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत डॉ. अर्जुन दास केशरी, डॉ. ओम प्रकाश त्रिपाठी, चेयरमैन कृष्ण मुरारी गुप्ता, सभासद यादवेन्द्र दत्त व ब्र.कु. सुमन।

मोहन की झाँकी में झाँको...

कहते हैं कि श्रीकृष्ण सोलह कलाओं से सम्पूर्ण थे। अब सोलह कला का यहां अर्थ यह है कि जिसके अंदर सौ प्रतिशत पवित्रता हो, अर्थात् जिसके एक गुण को यदि सोलह प्रकार से व्याख्या की जाए, फिर भी कोई नुक्स ना निकाला जा सके, वो है सोलह कला। आज भी सबके अंदर कलाएं हैं, लेकिन उन कलाओं के साथ पवित्रता नहीं है। उन्हें खरीदा व बेचा जाता है। जब कोई तुलना करता है तो कहता है कि अगर कला थी तो श्रीकृष्ण के अंदर। इतिहास को यदि देखें तो हम पायेंगे कि कोई भी ऐसा व्यक्तित्व नहीं होगा जिसको हम सोलह कला सम्पूर्ण कहते हों। कहते थे श्रीकृष्ण के अंदर सम्पूर्ण आरोग्यता, सुंदरता, आत्मिक बल और पवित्रता आदि भरपूर मात्रा में थी। अन्य कोई भी व्यक्ति शारीरिक, आत्मिक दोनों दृष्टिकोणों से इतना सुंदर, आकर्षक, प्रभावशाली और

प्रभुत्वशाली नहीं हुआ।

इतने महान कैसे बने?

लोगों में एक छंद भी प्रसिद्ध है, जिसका अर्थ है कि हे राधे! तुमने कौन सा ऐसा पुरुषार्थ किया था कि वैकुण्ठ नाथ श्रीकृष्ण तुम्हारे अधीन हो गए। तो जो बात राधे के बारे में प्रचलित है वही कृष्ण के बारे में भी तो पूछी जा सकती है। श्रीकृष्ण को योगेश्वर के नाम से भी हम जानते हैं। अब इसका अर्थ तो यही हुआ कि वो भी ईश्वर के साथ बैठकर योगाभ्यास किया करते थे, तभी तो उनका नाम योगेश्वर है। श्रीकृष्ण के जीवन में तो किसी भी गुण व शक्ति आदि की कमी नहीं थी जिसकी प्राप्ति के लिए वे योगाभ्यास करते, लेकिन हाँ पूर्व जन्म में वे ऐसा अभ्यास अवश्य कर सकते हैं। हो सकता है कि यह बात आम इंसान के गले से ना उतरे कि वो तो स्वयं परमात्मा हैं, उन्हें योग की क्या आवश्यकता है। परंतु आप ही तो कहते हो `लॉर्ड कृष्णा', `लॉर्ड रामा' अर्थात् राम और कृष्ण दिव्य गुणधारी मनुष्य थे और इस मनुष्यता से निकल देवता बनने हेतु अवश्य पुरुषार्थ किया होगा, तभी उन्हें ऐसा कहा जाने लगा कि वो तो भगवान हैं। यह स्वाभाविक है क्योंकि परमात्मा के सभी गुण और सभी शक्तियां आप कृष्ण के अंदर देख सकते हैं।

> दुनिया में तो बहुत आदर्श पैदा हुए, महान विभूतियां पैदा हुईं, परंतु इन सभी महान विभूतियों के पीछे का इतिहास बहुत ही रोचक रहा है, आश्चर्यचकित करने वाला रहा है। विभूतियों ने इस समाज को वो दिया जो एक आम इंसान सपने में भी नहीं सोच सकता। ऐसा आकर्षणमय व्यक्तित्व जिसे दुनिया आज भी पालने में बड़े प्यार से झुलाती है, उसे प्यार करती है, पुचकारती है तो कोई साधारण व्यक्तित्व तो नहीं रहा होगा ना कृष्ण!

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

कृष्ण के जीवन में झांको

सबसे पहले कृष्ण जन्माष्टमी में अगर कोई आकर्षण का मुख्य केन्द्र होता है तो वो है कृष्ण की विभिन्न बाल लीलाओं का दृश्य जिसे झाँकी कहते हैं। अब उनकी बाल लीला ही क्यों

- शेष पेज 11 पर

7 कदम राजयोग की ओर.....

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: श्रीकृष्ण जी के बारे में ये जो मान्यतायें प्रचलित हैं कि उनका जन्म जेल में हुआ और जन्म के समय फूलों की बरसात हुई, जेल के ताले खुल गए और बचपन में ही उन्होंने अनेक असुरों का संहार किया, इनमें से कुछ बातें बड़ी काल्पनिक सी लगती हैं, क्या आप इन बातों से सहमत हैं?

उत्तर: सत्य तो यह है कि श्रीकृष्ण के बारे में पुराणों आदि में जो कुछ भी लिखा है, उनसे सभी विद्वान आदि भी सहमत नहीं हैं। किसी भी महापुरुष के चरित्र के साथ बाद में अनेक बातें जुड़ जाया करती हैं, फिर श्रीकृष्ण जी तो इस सृष्टि के महानायक हैं। उनके बारे में कई लेखकों ने कुछ ऐसी-वैसी बातें भी जोड़ दी हैं, जो हुबहू वैसी नहीं हैं। असुरों आदि के विनाश की जो बातें लिखी हैं, ये वास्तव में आसुरी वृत्तियों के विनाश की बात है।

श्रीकृष्ण जिनकी भक्ति में बहुत पूजा हो रही है, वो तो सतयुग के सर्वश्रेष्ठ देवता थे, जो कि बाद में चलकर श्रीनारायण के रूप में सिंहासन पर बैठे, वे सम्पूर्ण पवित्र, सम्पूर्ण अहिंसक और सर्व शक्तियों से सम्पन्न थे। उनके काल में असुर होते ही नहीं। ऐसा लगता है कि द्वापर के अंत में इसी नाम से कोई अति शक्तिशाली और दिव्य पुरुष यहां पर थे, उन दोनों के चरित्र को मिला दिया गया है। क्योंकि सतयुग में किसी के संहार की ज़रूरत नहीं होती, अपितु द्वापर के अंत में कुछ आसुरी शक्तियां प्रबल हो जाती हैं।

श्रीकृष्ण जब सतयुग के आदि में इस धरा पर अवतरित हुए तो प्रकृति ने उनका स्वागत किया और फूलों आदि की बरसात हुई, परन्तु उनका जन्म जेल में नहीं, सोने के महल में हुआ था। जो कंस आदि के वध की और उनके माता-पिता को जेल में रखने की कहानियां हैं, ऐसा लगता है कि इनके पीछे कुछ आध्यात्मिक रहस्य हैं।

प्रश्न: भक्त श्रीकृष्ण को ईश्वर का ही रूप मानते हैं। उनकी सभी कहानियों से ये भी स्पष्ट होता है कि उनके पास अनंत शक्तियां थीं, क्या आप भी उन्हें भगवान मानते हैं?

उत्तर: ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में जो ज्ञान दिया जाता है वो स्वयं ज्ञान सागर निराकार परमात्मा ने ब्रह्मा के द्वारा दिया, वो ही ज्ञान सम्पूर्ण सत्य है और मनुष्य को पतित से पावन बनाने वाला है। ज्ञान देते हुए उन्होंने बताया कि किसी भी देहधारी को भगवान नहीं कहा जाता, जबकि श्रीकृष्ण को तो अपना देह है। उन्होंने जन्म भी लिया और देह भी छोड़ा, जबकि परमात्मा तो जन्म मरण से न्यारे हैं। इसलिए श्रीकृष्ण भगवान नहीं परंतु भगवान के समान अवश्य हैं, नेक्स्ट टू गॉड हैं।

जब कोई भी आत्मा सम्पूर्ण पवित्र बन जाती है तो वह बहुत शक्तिशाली हो जाती है। यही रहस्य है श्रीकृष्ण के शक्तिशाली होने का, लेकिन उनकी अलौकिक शक्ति मनुष्यों के संहार के लिए नहीं बल्कि दुर्गुणों और आसुरी शक्तियों के संहार के लिए होती है।

प्रश्न: कहीं-कहीं शास्त्रों में ऐसा भी सुनने में आता है कि श्रीकृष्ण ने अपने पूर्व जन्म में गहन तपस्या की थी, कुछ लोग ये भी मानते हैं कि श्रीकृष्ण के तन में परमात्मा ने प्रवेश करके ही गीता ज्ञान दिया था। क्या ये सत्य बातें हैं?

उत्तर: सृष्टि चक्र का रहस्य खोलते हुए त्रिलोकी नाथ परमात्मा ने स्पष्ट किया कि श्रीकृष्ण का जन्म तो सृष्टि के आदि में हुआ था, और वही आत्मा जन्म लेते-लेते अनेक पार्ट प्ले करते-करते जब कलियुग के अंत में पहुंची तो उनके ही तन में परमात्मा ने प्रवेश करके सत्य गीता ज्ञान दिया, क्योंकि वही सृष्टि की सबसे महान आत्मा है और उनका ही उन्होंने नाम रखा प्रजापिता ब्रह्मा। अर्थात् जो श्रीकृष्ण थे वे सृष्टि के आदि में थे और कलियुग के अंत में वे ही बने प्रजापिता ब्रह्मा। तो प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा परमात्मा ने ज्ञान दिया, ना कि श्रीकृष्ण के तन में प्रवेश करके, क्योंकि सतयुग में तो धर्म अपने सतोप्रधान स्वरूप में था। वहां सभी देवात्मायें ज्ञान स्वरूप में स्थित थीं, वहां किसी को भी ज्ञान सुनने की आवश्यकता ही नहीं थी।

श्रीकृष्ण के अंतिम जन्म में जब वे प्रजापिता ब्रह्मा थे, उन्होंने ही निराकार परमात्मा से सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया और राजयोग की गहन तपस्या की। इस गहन तपस्या के बल से वे पुनः मायाजीत बनकर जगतजीत बने। इसीलिए कहीं-कहीं ये लिख दिया गया है कि श्रीकृष्ण ने पूर्व जन्म में गहन तपस्या की थी।

प्रश्न: ब्रह्माकुमारीज़ में हम हर जगह ये लिखा पाते हैं कि श्रीकृष्ण आ रहे हैं, हम भी ये पढ़ते-पढ़ते, सुनते-सुनते थक गए हैं, लेकिन श्रीकृष्ण का कोई अता-पता नहीं, वे आएंगे भी या नहीं, या ये आपके प्रचार का ही साधन मात्र है?

उत्तर: ज्ञान सागर परमात्मा ने जब प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश किया तब सर्वप्रथम उन्हें ही स्थापना और विनाश का सम्पूर्ण साक्षात्कार करा दिया था और कहा था कि अब तुम गहन तपस्या करो और मेरा माध्यम बन जाओ। स्वयं भगवान ने ही ये महावाक्य उच्चारे थे कि आने वाले महाभारी महाभारत युद्ध द्वारा विनाश के बाद श्रीकृष्ण का इस धरा पर आगमन होगा और ये धरा स्वर्ग बन जायेगी।

श्रीकृष्ण तो जल्दी ही आना चाहते हैं, लेकिन लोग सच्चे मन से उनका आह्वान नहीं करते। इसका बड़ा गुह्य अर्थ है। विषय-वासनाओं में लिप्त आत्माओं के आह्वान पर वो देवात्मा नहीं आयेंगे। उनका आह्वान करने के लिए तो स्वयं को पावन बनाना होगा, देवत्व से सम्पन्न करना होगा। यही कारण है कि वो महान देवात्मा सभी के पवित्र होने का इंतज़ार कर रही है। दूसरी बात, उनका आगमन कलियुग की इस तमोप्रधान और पाप से भरी दुनिया में नहीं हो सकता। उनके लिए तो प्रकृति और मनुष्य दोनों का सम्पूर्ण पवित्र होना आवश्यक है।

तो जल्दी-जल्दी आप भी पवित्र बन जाइये और इस तरह जब अनेक मनुष्यात्मायें पवित्र बन जायेंगी तो इस कलियुगी सृष्टि का विनाश हो जायेगा और ये संसार देवताओं के आगमन के लिए तैयार हो जायेगा। हमें पूर्ण विश्वास है कि अब शीघ्र ही आपके इंतज़ार की घड़ियां समाप्त हो जायेंगी और जल्दी ही श्रीकृष्ण इस धरा पर आ जायेंगे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

Peace of Mind
For Cable & DTH
+91 8104777111
TATA Sky 192 airtel digital TV 686 videocon d2h 497 RELIANCE Digital TV 171
"C" Band, MPEG4 DVB-S2 Receiver-FRQ: 4054, POL: H, SYM: 13230, INSAT: 4A, DEG:83*E

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान – मैं मास्टर रचयिता हूँ।

जैसा बीज होता है, वैसा ही वृक्ष व फल होते हैं। जैसा रचता होता है, वैसी ही उसकी रचना होती है। यदि रचता कमज़ोर होगा तो उसकी पूरी रचना भी कमज़ोर होगी। यदि रचता व्यर्थ और निगेटिव से ही सदा घिरा रहता होगा तो उसकी रचना भी... यदि रचता समर्थ होगा तो... अब सोच लें कि आप अपनी रचना को कैसा देखना चाहते हैं?

योगाभ्यास – मैं मास्टर रचना कल्पवृक्ष के जड़ में बैठा हूँ...सारा कल्पवृक्ष मुझसे जुड़ा हुआ है...मैं विश्व रचता, सर्वशक्तिवान, ज्ञान सूर्य बाबा से शक्तियों की किरणें लेकर सारे कल्पवृक्ष में फैला रहा हूँ। मैं इस देह का मालिक हूँ... देह के मालिक बनने वाले ही प्रकृति व विश्व के मालिक बनेंगे...इसलिए देह के मालिक बनकर अपने सर्व सूक्ष्म व स्थूल कर्मेन्द्रियों को ऑर्डर में चलायें।

धारणा – न्यारा और प्यारा।

शिव भगवानुवाच – सदा कमल पुष्प का दृष्टान्त स्मृति में रहे कि मैं कमल पुष्प समान न्यारी और प्यारी आत्मा हूँ। जब आपकी रचना कमल न्यारा रह सकता है तो आप मास्टर रचता उससे भी ज़्यादा न्यारे नहीं रह सकते? जितना देह और दुनिया से न्यारे रहेंगे, उतना बाप का प्यार मिलेगा।

चिन्तन – न्यारी और प्यारी स्थिति क्या है? कहाँ न्यारा बनना चाहिए और कहाँ प्यारा? न्यारेपन और प्यारेपन के बीच बैलेन्स कैसे रखें? न्यारे और प्यारे के लिए उच्चारे गए बाबा के पाँच महावाक्य लिखें।

तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति – प्रिय आत्मन्। जैसे साकार ब्रह्मा बाबा से सबने उनके जीवन के आदि से अंत तक दर्शनीयमूर्त अनुभव किया, वैसे ही आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली हर आत्मा महसूस करे कि ये न्यारे, अलौकिक व दर्शनीयमूर्त हैं। आपका हर बोल, कर्म, चलन व चेहरा स्वतः सिद्ध करे कि इन्हें ऐसा बनाने वाला कौन! आपका प्रैक्टिकल जीवन ही रचता बाप को प्रत्यक्ष करेगा।

स्वमान – मैं मास्टर मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता हूँ।

शिवभगवानुवाच – मुक्ति और जीवनमुक्ति के मास्टर दाता बनने की विधि है - सेकेण्ड में देहभान से मुक्त हो जायें। जैसे इन स्थूल कर्मेन्द्रियों को जब चाहें, जहां चाहें, जैसे चाहें वैसे यूज़ कर सकते हो, ऐसे ही मन के ऊपर इतना कन्ट्रोल हो कि जब चाहें जिस स्थिति में चाहें, जितना समय चाहें, उतना समय एकाग्र हो जायें, अचल हो जायें।

योगाभ्यास – **अ**. मैं आत्मा राजा भृकुटि सिंहासन पर... सभी स्थूल-सूक्ष्म कर्मेन्द्रियां मेरे सामने... एक-एक कर्मेन्द्रियों से हालचाल पूछें... और उनकी महानताओं को याद दिलायें...फिर योग के द्वारा प्रत्येक कर्मेन्द्रियों को प्योर वायब्रेशन्स दें... अनुभव करें कि सभी कर्मेन्द्रियां शांत, शीतल और सुगंधित हो रही हैं।

ब. रूहानी ड्रील - तीनों लोकों की सैर करते हुए स्वयं को एकाग्र करें - कभी मैं फरिश्ता ग्लोब के ऊपर... कभी वतन में बापदादा के सम्मुख... तो कभी परमधाम में ज्ञान सूर्य की किरणों के नीचे...।

धारणा – निमित्त भाव। सदा याद रहे - करावनहार बाप मुझ करनहार आत्मा द्वारा सेवा करा रहे हैं। मैं आत्मा निमित्त हूँ। निमित्त भाव से निर्मान स्थिति स्वतः ही हो जाती है और निर्मान स्थिति से देहभान सवतः ही समाप्त हो जाता है।

चिन्तन – क्यों आवश्यक है एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाना? कौन-कौन सी बातें हमारी एकाग्रता को भंग करती हैं? एकाग्रता की शक्ति को कैसे बढ़ायें? एकाग्रता के लिए बाबा के महावाक्य।

तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति – प्रिय साधकों! एकाग्रता से हमें सर्व शक्तियाँ और सर्व सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। एकाग्रता से एक बाप से सारे संसार की सर्व प्राप्तियों का अनुभव होता है और हर कार्य में सहज सफलता भी प्राप्त होती है। अतः आप सारे दिन में अपने मन-बुद्धि को बार-बार एकाग्र करने का अभ्यास करते रहें।

पवित्रता के प्रतीक... - पेज 4 का शेष

का आह्वान करने के लिए पहले तो भारत के वासियों के आहार-व्यवहार-विचार के शुद्धिकरण की आवश्यकता है। आज तो भारत में घर-घर में `काम' बसता है, सभी के मन में `दाम' बसता है। श्री कृष्ण को पधारने के लिए तो कोई जगह ही खाली नहीं है, तब एक नगर के दो राजा कैसे हो सकते हैं? देखा जाता है कि `सन्यासी' और `महात्मा' लोग अपनी साधना अथवा पुरुषार्थ से पवित्रता को प्राप्त करते हैं। वे जन्म से ही महात्मा नहीं होते हैं। जब से महात्मा बनते हैं, तभी उनके चित्रों में उनके सिर के पीछे प्रकाश का ताज (प्रभामण्डल) अंकित किया जाता है, परंतु श्रीकृष्ण को तो शिशु काल से ही रत्न-जड़ित मुकुट के साथ `प्रकाश का ताज' प्राप्त था। वे जन्म से ही निर्विकारी थे और इसलिए उनके रत्नजड़ित मुकुट के अंदर मोर पंख भी लगाते हैं और उन्हें मोर `मुकुटधारी' भी कहते हैं। जन्म से ही पवित्रता का तथा रत्न जड़ित ताज प्राप्त होने से सिद्ध है कि श्रीकृष्ण ने पूर्व जन्म में कोई बहुत ही महान पुरुषार्थ किया होगा, जिसके फलस्वरूप उन्हें स्वस्थ एवं सुंदर तन, निर्मल मन, अतुल धन और अनुपमेय सम्मान प्राप्त हुआ। हमें भी उनके महान पुरुषार्थ को जानना होगा। हमारा कर्त्तव्य है कि हम उनके उच्च जीवन से प्रेरणा लेकर अपना जीवन भी वैसा उच्च बनाने का यथार्थ पुरुषार्थ करें।

मोहन की झाँकी.... - पेज 10 का शेष

दिखाई जाती है? आप भी इसपर सोच सकते हैं, परंतु हम कुछ आपको अवश्य बताना चाहेंगे कि जब बालक छोटा होता है, उस समय उसे सम्पूर्ण पवित्र माना जाता है, उस समय उसकी की गई सभी हरकतों को आप बड़े चाव से देखते हैं तथा उसे याद रखने के लिए उसकी फिल्म भी बनाके रखते हैं। उस समय विकार की उसमें बू भी नहीं आती। इसी प्रकार श्रीकृष्ण जी थे, चूंकि वे दिव्य गुण से सजे-सजाये थे इसलिए उन्हें और गहराई से याद किया जाता है।

तो झाँकी का अर्थ यह हुआ कि जिसने अपने जीवन में, अपने व्यक्तित्व में हर क्षण, हर पल अपनी गलतियों को झाँक-झाँक के देखा और उसे ठीक भी किया, तभी तो एक भी दाग कृष्ण के व्यक्तित्व पर दिखाई नहीं देते। तो हमें इस कृष्ण जन्माष्टमी पर कृष्ण के व्यक्तित्व से क्या लेना है? क्या सिर्फ उनकी झाँकी देखकर, संतुष्ट होकर अपने घर आ जाना है या फिर अपने भीतर की बुराइयों को झाँक कर के नष्ट करना है। तो आप भी अपने जीवन में अवश्य झाँकें, तभी कृष्ण की झाँकी के साथ न्याय होगा, और यदि वे आपके आदर्श हैं तो आप उन्हें अपने व्यक्तित्व में परिवर्तन कर सच्ची सौगात दे पायेंगे।

रायगडा-ओडिशा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए आचार्य राजेन्द्र जी,पतंजलि योग गुरु,हरिद्वार। साथ हैं जगन्नाथ मोहन्ती,कलेक्टर एंड डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, डॉ. सुरेन्द्र कुमार बेहेरा,जिला अध्यक्ष,पतंजलि योग समिति व ब्र.कु. श्रीमती।

मॉस्को। आध्यात्मिक कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में माउण्ट आबू से ब्र.कु. रामलोचन, ब्र.कु. सूर्यमणि व ब्र.कु. पद्मनाभ। साथ हैं ब्र.कु. सुधा, ब्र.कु. विजय व अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

इलाहाबाद। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए बायें से ब्र.कु. सुषमा, स्वामी विद्यानंद,सच्चा आश्रम, डॉ. ए.वी. वान्डे,डायरेक्टर,कॉल्वेन हॉस्पिटल, ब्र.कु. कमल, ब्र.कु. मनोरमा व डॉ. अन्जू गुप्ता,रोट्री प्रेसीडेंट।

बरनाला-पंजाब। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान दीप प्रज्वलित करते हुए राजपाल शर्मा,मैनेजर,श्री शांति सिरप, डॉ. त्रिलोकी, प्रो. प्रेम शर्मा, चरणजीत मित्तल,प्रिन्सीपल,सेन्ट्रल हाई स्कूल,एयरफोर्स, ब्र.कु. डॉ. प्रो. सीमा, ब्र.कु. ब्रिज बहन व अन्य।

वीरगंज-नेपाल। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'स्वस्थ एवं सुखी समाज हेतु राजयोग का महत्व' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए भारतीय महावाणिज्य राजदूत अन्जू जी, ब्र.कु. रविणा, ब्र.कु. बेली, रेडक्रॉस की पूर्व अध्यक्षा मधु राणा व समाजसेवी उषा शाह।

उज्जैन। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'राजयोग मेडिटेशन' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. निरुपमा व म.प्र. के शिक्षामंत्री पारस जैन।

आगरा-कमला नगर। आगरा कॉलेज के ग्राउण्ड में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेन्स में उपस्थित हैं सर्वधर्म के प्रतिनिधि तथा अन्य समाजसेवी संगठन के प्रतिनिधियों के साथ ब्र.कु. शशि।

एक अभूतपर्व अलौकिक दिव्य समारोह

डायमण्ड हॉल सभागृह में अलौकिक, दिव्य समारोह में मंचासीन हैं संगठन की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी तथा वरिष्ठ भाई बहनें व समर्पण का संकल्प लेते हुए बहनें।

शांतिवन। बारिश की रिमझिम के मध्य नुमाशाम के समय डायमण्ड हॉल में इन्द्र के साक्ष्य में परियों को स्वयं भाग्यविधाता द्वारा निहारते देखा। इस घड़ी का लुत्फ हर कोई उठाना चाहता था और अपनी उपस्थिति की दस्तक देना चाहता था। ऐसा हो भी क्यों ना, क्योंकि परमात्मा के विश्व परिवर्तन के भागीरथ कार्य को करीब दो सौ बाल ब्रह्मचारी बहनों ने आगे बढ़ाने का दृढ़ संकल्प किया। समय,श्वास, तन, मन और सर्वस्व समर्पण करने का संकल्प लिया। जैसे ही दादीजी ने डायमण्ड हॉल सभागृह में प्रवेश किया, चारो ओर एक अलौकिक आभा की छटा बिखरने लगी। पूरी सभा स्वर्णिम चुन्नी पहनकर समर्पित होने चली कुमारियों से सजी हुई थी। यह दृश्य बहुत ही अलौकिक, आकर्षक व रमणीय था। कार्यक्रम के पूर्व में नन्हें बच्चों ने अपनी भावनाओं के प्रतिकात्मक रूप में नृत्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम को विधिपूर्वक

ईश्वरीय कार्य अर्थ समर्पण संकल्प

1. मैं स्वेच्छा से प्रभु कार्य के लिए समर्पित होने जा रही हूँ।
2. ईश्वरीय मर्यादाओं में रहकर हर श्वास और समय सफल करूंगी।
3. ना मैं किसी से ईर्ष्या, द्वेष रखूंगी, ना पांचों विकारों के वशीभूत होऊंगी और ना ही दूसरों के प्रति ऐसा व्यवहार रखूंगी।
4. निमित्त दादी जी जहां भी ईश्वरीय सेवार्थ भेजेंगी वहां सहर्ष जाऊंगी।
5. परमात्मा के परिवर्तन के कार्य को पूरे समर्पण भाव से निभाऊंगी।

अंजाम देने के लिए सभी को दृढ़ संकल्प पत्र पढ़कर सुनाया गया। इस अलौकिक समारोह के मध्य कुमारियों के माता-पिता ने भी हृदय से अपनी पुत्रियों को इस कार्य के लिए स्वीकृति प्रदान की। इस समारोह में प्रत्यक्षदर्शियों का कहना था कि ऐसा समारोह मैंने अपने जीवन में नहीं देखा जो इतना अलौकिक, दिव्यतम और खुशियों से भरा हो और जिस वातावरण में ये कुमारियां प्रभु के कार्य में समर्पण होकर जीवन बिताने जा रही हैं। कार्यक्रम के अंत में दादीजी ने सभी के साथ मिलकर केक काटा और अपने हाथों से सबको खिलाया।

अध्यात्म संस्कार व संस्कृति का सेतु

त्रिदिवसीय धर्म सम्मेलन का आयोजन

राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए अतिथिगण

ब्रह्माकुमारीज़ के मनमोहिनी वन परिसर के ऑडिटोरियम में सर्व धर्म सम्मेलन का हुआ आयोजन

शांतिवन। विज्ञान कहता है बदलाव के बिना प्रगति नहीं। विज्ञान ने हमें बहुत कुछ दिया है, लेकिन मन की शांति नहीं दे सका। इसके लिए हर एक भटक रहा है। अध्यात्म और परमात्मा के सानिध्य से ही सच्ची शांति की प्राप्ति हो सकती है। कोई भी धर्म या मज़हम हो, आपस में प्यार रखना सिखाता है वैर नहीं। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ के धार्मिक प्रभाग द्वारा मनमोहिनी वन परिसर में आयोजित सर्वधर्म सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए जोधपुर के सवामी शिवस्वरूपानंद ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि संस्कार और संस्कृति से देश बनता है, इतना ही नहीं, संस्कृति देश की शोभा है। संस्कृति के ऊपर जो देश ध्यान देता है वह देश अपने आप ऊपर आएगा। किसी देश को मिटाना है तो कोई शस्त्र की ज़रूरत नहीं है, सिर्फ संस्कृति मिटा दो देश मिट जाएगा। ब्रह्माकुमारी संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि धर्म बहुत हैं, लेकिन धर्मयुक्त कर्म न होने के कारण प्राप्ति नहीं हो रही है।

इस अवसर पर अयोध्या के हरिधाम पीठ गोपाल मंदिर के स्वामी रामदिनेशाचार्य, सीतापुर के स्वामी केशवानंद सरस्वती, धार्मिक प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. मनोरमा, धार्मिक प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. रामनाथ, सिक्ख धर्म, वृंदावन के स्वामी अनिरूद्ध महाराज, करनाल के प्रधान गुरुद्वारा प्रबंधक जगदीश सिंह झिंडा, ऑल इंडिया मुस्लिम फेडरेशन अयोध्या के महासचिव अब्दुल लतीफ समेत कई लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मलाड सेवाकेन्द्र प्रभारी कुंती ने किया।

मेमोरी पावर बढ़ाने का आधार मेडिटेशन

नवसारी। जे.एन. टाटा हॉल में `द साइंस ऑफ माइंड मैनेजमेंट' विषय पर सम्बोधित करते हुए प्रो. ब्र.कु. स्वामीनाथन ने कहा कि अगर मन को नियंत्रित रखा जाए तो इससे हमारी मेमोरी पावर में अद्भुत वृद्धि होती है। उन्होंने ये विचार नारनलाला एज्युकेशन इंस्टीट्यूट द्वारा आयोजित इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर डॉ. रमेश सी. गांधी के निवृत्ति अभिवादन समारोह में व्यक्त किये। इस ज़बरदस्त याद शक्ति के पीछे लगातार मेडिटेशन का अभ्यास बताया। साथ साथ उन्होंने बताया कि शब्दों को याद रखने के लिए उनका इमेज क्रियेट करना चाहिए न कि रटना। कई बार मनुष्य भूलने वाली बातों को तो याद रखता है, परन्तु याद रखने योग्य बातें भूल जाता है, जिसके कारण ही वो स्वयं, स्वयं को परेशान करता है। अतः मेडिटेशन द्वारा ज़रूरी बातों को याद रखने तथा अनावश्यक बातों को भूलने की भी कला स्वतः आ जाती है।

उन्होंने कहा कि हमें अपनी मेमोरी को ट्रेन्ड करना पड़ता है। सर्व स्मृतियाँ इस शरीर के अंदर (हार्डवेयर), जो चैतन्य ऊर्जा आत्मा (सॉफ्टवेयर) है, उसमें सेव होती हैं। जैसे मोबाईल का डाटा मेमोरी कार्ड में, कम्प्युटर का डाटा हार्डडिस्क में, विमान का डाटा उसके ब्लैक बॉक्स में सेव होता है, ठीक वैसे ही हमारे अंदर जो ऊर्जा आत्मा (ए प्वाइंट ऑफ लाइट) छोटी सी है उसमें सब कुछ सेव होता है। आत्मा के बिना यह शरीर मात्र साधन रह जाता है जैसे कि सिम कार्ड के बिना मोबाईल। इसके बाद उन्होंने सभी को होमवर्क भी दिया जिसका रोज़ सुबह-शाम अभ्यास करने को कहा - `आई एम ए हैप्पी एंड पावरफुल सोल' इससे स्वयं को ऊर्जावान व शांतिवान अनुभव कर सकेंगे।

विशेष आर.सी. गांधी को शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने कहा कि एक शिक्षक कभी भी निवृत्त नहीं होता। वह सदैव कुछ न कुछ सीखता व सिखाता रहता है। इसके बाद सभी ने डॉ. आर.सी. गांधी को अपनी-अपनी शुभकामनाएं तथा सौगातें दीं। संस्थान की तरफ से सम्मान पत्र भेंट किया गया तथा ब्र.कु. स्वामीनाथन के हस्तों से श्री गांधी को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। ब्र.कु. गीता,नवसारी सेवाकेन्द्र संचालिका ने ईश्वरीय सौगात व प्रसाद

समारोह में शरीक मेहमानों की उपस्थिति में डॉ. रमेश सी. गांधी का सम्मान करते हुए ब्र.कु. ई.वी. स्वामीनाथन।

भेंट कर शुभकामनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम में लगभग 500 कॉलेज के स्टूडेंट्स प्रोफेसर्स, व्यापारीगण व शहर के गणमान्य जन उपस्थित रहे।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510
सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - **9414006096, 9414182088,** Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक **190** रुपये, तीन वर्ष **570** रुपये, आजीवन **4500** रुपये । **विदेश - 2500** रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 16th Aug 2015
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।